इस्लाम

और

इक्कीसवीं सदी

लेखक

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम-मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा, रायपुर (छ.ग.)

एक्स लेक्चरार आर.एस. यूनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

शायकर्दा
मोहसिने मिल्लत एकेडमी
मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा,
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)
फोन 0771-535283

इस्लाम
और
इक्कीसवीं सदी

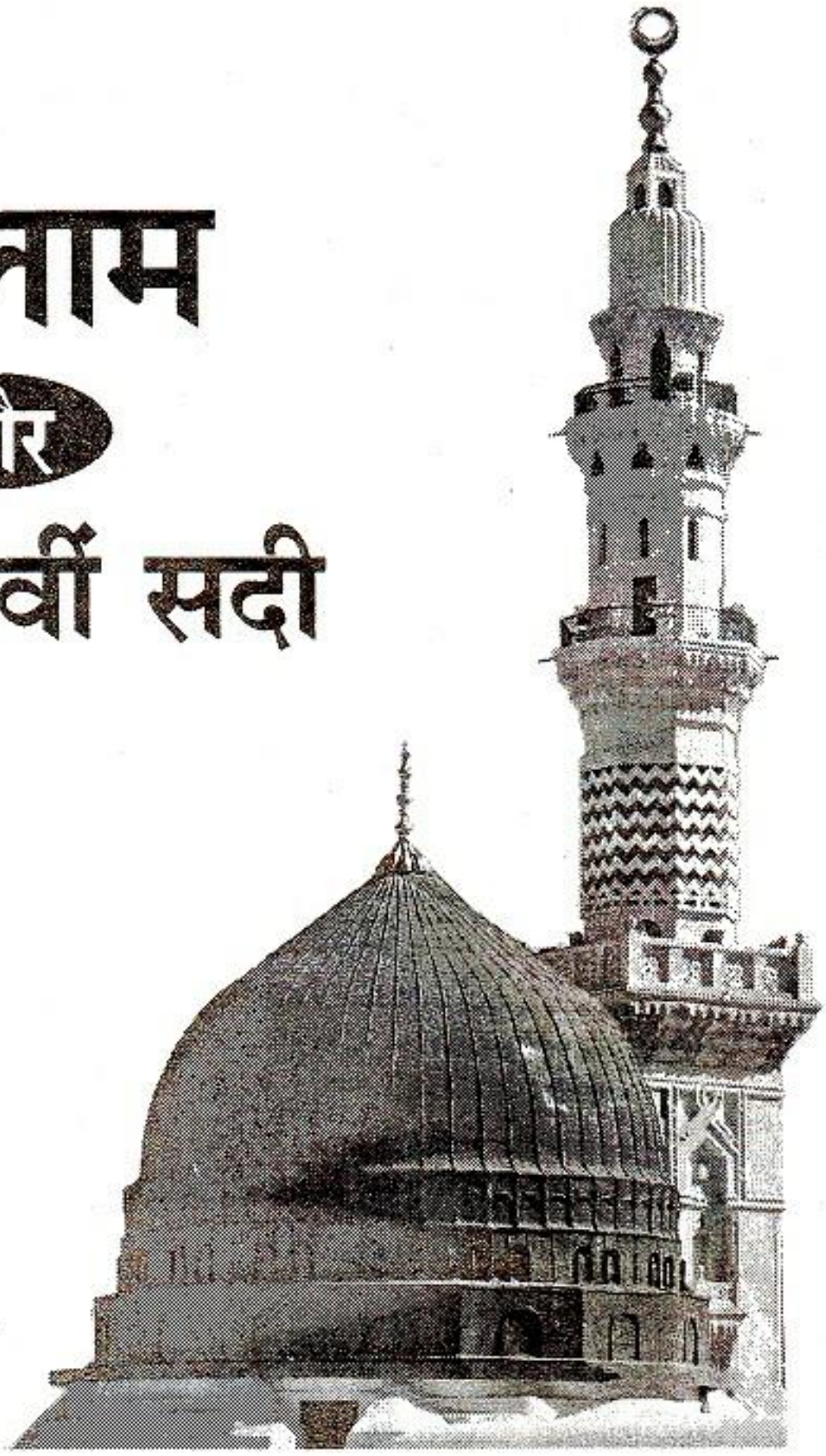

लेखक

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम-मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा, रायपुर (छ.ग.)

एक्स लेक्चरार आर.एस. यूनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

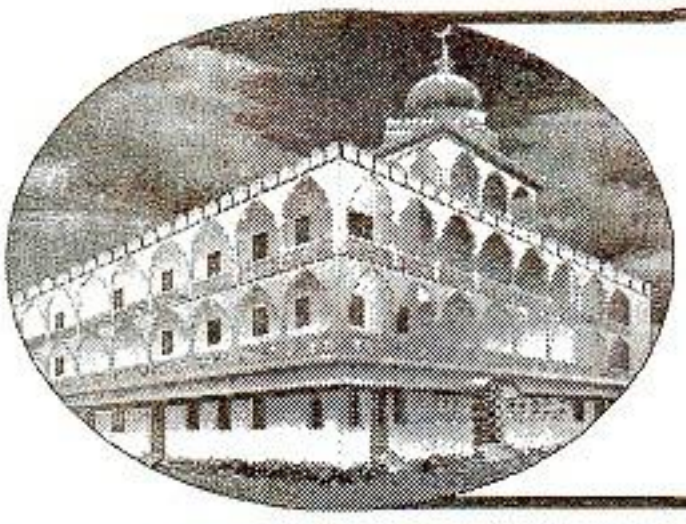

शायकर्दा

मोहसिने मिल्लत एकेडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा,

बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771-535283

फेहरिस्त (अनुक्रमणिका)

उनवान (विषय)	पेज नम्बर
1. दो शब्द	3
2. ईद मिलादुन्नबी और विश्व क्रांति	5
3. ईद मिलादुन्नबी और मानव अधिकार	20
4. इस्लामिक समानता और इक्कीसवीं सदी	25
5. पैगम्बर इस्लाम सारे संसार के लिए नमून-ए-अमल	30
6. मानव अधिकार और हज्जतुल वेदा	34

संस्करण	प्रति	वर्ष
प्रथम संस्करण (पहली इशाअ़त)	5000	2002
दूसरा संस्करण (दूसरी इशाअ़त)	5000	2010
तीसरा संस्करण (तीसरी इशाअ़त)	5000	2015

Rs. 30/-

दो शब्द.....

इंसानी तारीख में इक्कीसवीं सदी एक ऐसी सदी है जिसने अपने हैरत अंगेज़ तरक्की से सारी दुनिया को एक छोटे से गांव में बदल दिया। खुसूसन कम्प्यूटर और इंटरनेट ने आज के समाज में जो इन्केलाब पैदा किया वोह गांव के पंचायत से लेकर दिल्ली के पार्लियामेंट तक ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय संघ (U.N.O) के प्लेटफार्म तक ऐसी क्रांती का जन्मदाता बन गया जिसकी पिछली शताब्दी में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

मगर उन सारी तरक्कीयों और उन्नतीयों के बावजूद आज का इंसान अपने हृदय में एक अंधकार देख रहा है। धरती से उठकर आकाश की ऊंचाई को चैलेंज करने वाला इंसान आज अपने मन आंगन के अंधकार को दूर करने में जिस तरह विफल है। आकाश गंगा से आंख लड़ाने वाला मनुष्य अपनी मनुष्यता को बचाने में जिस प्रकार असमर्थ है। जानवरों और पशुओं को शिक्षित बनाने वाला इंसान अपनी इंसानियत की रक्षा के लिए जिस तरह अंधकार में भटक रहा है वो सारे संसार वालों के लिए एक चुनौती है।

यही कारण है कि धर्म को चैलेंज करने वाला योरोप आज खुद धर्म की छत्र छाया ढूंढ रहा है। खुदा को चुनौती देने वाला रूस आज फिर खुदा की तलाश में भटक रहा है और नास्तिकता के अंधकार में संसार को भटकाने वाला अपने हृदय के अंधकार को दूर करने के लिए आस्तिक बन रहे हैं।

संसार के सारे धर्मों में केवल इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो अपने सिद्धांतों के साथ पूरी तरह सुरक्षित है। इसके साथ ही साथ खुदा के आखरी पैगम्बर हज़रते मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) ही एक ऐसे पैगम्बर हैं जिनकी जीवनी का एक-एक क्षण इस तरह सुरक्षित है कि आज के वीडियो कैसेट और आडियो कैसेट के समय भी किसी की जीवनी को ऐसा सुरक्षित रखना असंभव है। यह न केवल एक खुला हुआ चमत्कार है बल्कि दिलों में इन्केलाब पैदा करने वाला ऐसा मोजेज़ा है जिसे संसार वालों के लिए खुदाई इनाम (God Gifted) कहा जा सकता है।

सूरज को धरती से इतना ऊंचा इसीलिए रखा गया है ताकि संसार का हर व्यक्ति आसानी से उसे देख कर उससे पूरा-पूरा फायदा उठा कर अपने जीवन को सुख वो शांति के प्रकाश से प्रकाशित कर सके।

पैगम्बरे इस्लाम को इतिहास के ऐसे ऊंचे स्थान पर इसीलिए रखा गया ताकि कोई भी व्यक्ति जब भी अपने हृदय के अंधकार को दूर करने के लिए किसी गौरवशाली व्यक्ति और आदर्श जीवन की तलाश में नज़र ऊपर उठाये तो उसकी नज़र सबसे पहले आप पर पड़े। दुखों की मारी दुनिया जिधर नजर दौड़ाए उधर रसूले पाक (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पवित्र जीवन का मधुर प्रकाश उसका स्वागत करता नज़र आए।

यही कारण है कि इक्कीसवीं शताब्दी में जब योरोप हर तरफ से ठोकर खाकर धर्म

की तरफ लौट रहा है उसे इस्लाम के क्रांतीकारी संदेश और रसूले पाक के पवित्र जीवन में सुख वो शांती और संसार के हर मनुष्य से प्रेम का नया संसार दिखाई दे रहा है। जहां सारे संसार के दुखों का इलाज है। तड़पती हुई इंसानियत के लिए खुशियों से भरा नया जीवन है। बेचैन रूहों और बर्बाद आत्माओं के लिए सुख वो शांती का मधुर झरना है और दम तोड़ती मानवता के लिए प्रेम वो मोहब्बत की शीतल सरीता है।

इस जगह में विश्व प्रसिद्ध विचारक बर्नाड शॉ का कौल नकल करूंगा। वो लिखते हैं-

if any religion has the chance of ruling over England any Europe within the next hundred years it can only be Islam.

अगर कोई धर्म जो आने वाली सदी में इंग्लैंड ही नहीं बल्कि पूरे योरोप पर अकेला शासन करेगा तो वो सिर्फ इस्लाम होगा।

आज दुनिया जिस तेजी के साथ इस्लाम की तरफ लपक रही है उसे देखकर यकीन के साथ कहा जा सकता है कि आने वाली सदी में इस्लाम के मधुर प्रकाश से सारा संसार जगमगाएगा और उसके अमृत वाणी और पवित्र संदेश की सुगंध से हर हृदय में एक नई क्रांती जागेगी और फिर इंसान झूठे खुदाओं की दास्तां से छुटकारा पाकर उस सच्चे खुदा की चौखट पर खड़ा दिखाई देगा जहां पहुंच कर आकाश से पाताल तक हर जगह इंसान की ही महांता का गीत सुनाई देता है। वहां पहुंचकर सारा संसार उस पर अर्पित दिखाई देता है और वो अपने खुदा की चौखड़ पर खड़े सारे संसार को सुख वो शांती भरा मधुर संदेश देता दिखाई देता है।

"इस्लाम और इक्कीसवीं सदी" मेरे उन लेखों का मजमुआ है जो मैंने कभी अखबारों और रिसालों के लिए लिखा था आज मोहसिने मिल्लत एकेडमी के जरिए वो आप के सामने है। जंगे आज़ादी के अज़ीम रहनुमा (स्वतंत्रता सेनानी) खलीफा ए आला हज़रत 'आरिफ बिल्लाह' वली ए कामिल गुले गुलज़ारे फारूकियत हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूकी बानी मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छ.ग.) ने मदरसा की स्थापना इसीलिए की थी कि मुसलमानों में देश की मोहब्बत (देशभक्ति) दीनी बेदारी के साथ, गैर मुस्लिमों तक इस्लाम का पैगाम पहुंचाया जाए। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ने अपनी जिंदगी में भी हजारों गैर मुस्लिमों के दिलों को इस्लाम की रौशनी से मुनव्वर किया था और आज भी यह मदरसा उनके मिशन को आगे बढ़ाने में दिन रात लगा हुआ है। मेरे लेख और मजमून को जब कुछ गैर मुस्लिम दोस्तों ने पढ़ा तो उनके दिलों में भी एक नये इंकेलाब ने जन्म लिया और फिर उनकी फरमाईश पर उसे किताबी शक्ल दी गई जो अब आप के सामने है। खुदा ने चाहा तो इस विषय और इस मौजू पर आइन्दा मुस्तकिल किताब आप के सामने होगी।

मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छत्तीसगढ़)

ईद मिलादुन्नबी और विश्व क्रांति

खुदा के आखरी पैगम्बर हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) का जन्म अरब के मशहूर शहर मक्का में 22 अप्रैल 571 ई. को हुआ। आप के पिता का साया आप के जन्म से कुछ माह पहले ही उठ चुका था। छह साल बाद आपकी वालिदा भी चल बसीं। फिर आपका पालन पोषण आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया मगर आठ साल की उम्र में वो भी स्वर्गवासी हो गये। इसलिए अब आपके चाचा अबु तालिब आप के सरपरस्त बने। आप उनकी सरपरस्ती में जीवन बिताते रहे। उनके साथ कई बार आपने सीरिया वगैरा की यात्रा भी व्यापार के सिलसिले में की। जब आप की आयु २५ वर्ष की थी तब अरब की मशहूर विधवा हज़रत खदीजा से आपका विवाह हुआ। जिनकी उम्र चालीस वर्ष की थी। मगर व्यापार वगैरा में आपकी अमानतदारी और आपकी सच्चाई देख कर वो इतनी ज्यादा प्रभावित हुईं कि उन्होंने आपको शादी का संदेशा दे दिया।

जब आप चालीस वर्ष के हुए तो खुदा की तरफ से आप ने नबूवत का एलान किया। आपने लोगों को बताया कि जिस खुदा ने सारी दुनिया को जन्म दिया और सारे संसार की रचना की। उसी ने मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए और उन्हें सत्य का मार्ग दिखाने के लिए लगभग एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर भेजे जिसमें सब से पहले ईश्वरीय दूत और सबसे पहले पैगम्बर हज़रते आदम हैं। जिनसे मनुष्य के जन्म का सिलसिला चला। चूंकि हज़रते आदम ही वास्तव में सारे मानव जाति के बाप और उनके पिता हैं। इसीलिए मनुष्य को आदमी कहा जाता है। हज़रते आदम के बाद मशहूर पैगम्बरों में हज़रते नूह, हज़रते इब्राहिम, हज़रते सुलेमान हज़रते दाऊद, हज़रते मुसा और हज़रते ईसा (अलैहिमुस्सलाम) के नाम बहुत मशहूर हैं। आपने फरमाया। जिस खुदा ने हज़रते आदम से लेकर हज़रते ईसा (अलैहिमुस्सलाम) तक मुकद्दस, पवित्र, गौरवशाली और महान पैगम्बरों का सिलसिला कायम फरमाया उसी खुदा ने मुझे भी अपना आखरी पैगम्बर बनाया।

आपने जब लोगों तक खुदा का पैगाम पहुंचाया तो अंधेरों के पुजारी और सच्चाई के दुश्मन आप पर टूट पड़े। जिन लोगों ने कीना, कपट, धोखा और

अत्याचार के भयानक अंधेरों में अपना जीवन बिताया था वही लोग इस प्रेम वो मोहब्बत की फैलती हुई रौशनी से घबरा कर आपके मानने वालों पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ने लगे। आप पर अत्याचार के ऐसे-ऐसे भयानक हथकंडे इस्तेमाल किये गये कि जिन्हें सुनकर आज की मानवता का सिर शर्म से झुक जाता है और पत्थर दिल मनुष्य का भी हृदय कांप जाता है। आपके मानने वालों पर लोगों ने आग बरसाया। उन्हें दोपहर की जलती हुई धूप में, तपती हुई रेत पर, नंगी पीठ लिटाया गया। उनके बाल बच्चों को सताया गया। उनके रास्तों में कांटे बिछाये गये। गर्ज कि नफरत के पुजारियों ने, घृणा के राक्षसों ने, मानवता के हत्यारों ने हक और सच्चाई की बढ़ती हुई रौशनी से घबरा कर पग-पग पर जुल्मो सितम और अत्याचार का ऐसा भयानक रिकार्ड बनाया जिससे आज भी मानवता लज्जावान है। मगर आप हर जुल्म और हर सितम पर खुदा से यही दुआ करते रहे कि ए अल्लाह उन्हें समझ दे और उन्हें माफ फरमा दे। वो अभी मुझे पहचानते नहीं।

आप पर जो अत्याचार के पहाड़ तोड़े गये उसका अंदाजा कुछ इससे लगाईये कि जब आप खुदा का पैगाम पहुंचाने कहीं जाते तो दुश्मन आपके रास्तों में जंगल से कांटा लाकर बिछा देते। जिससे आपका पैर लहूलुहान हो जाता। एक बार आप खुदा की याद में मगन नमाज़ पढ़ रहे थे कि शत्रुओं ने ऊंट की गंदी ओझड़ी आप पर डाल दी। जिसके बोझ से आप का उठना मुश्किल हो गया। इसी तरह मक्का के करीबी शहर "ताएफ" में जब आपने लोगों को खुदा का पैगाम सुनाया तो लोगों ने आप पर इतना भयानक अत्याचार तोड़ा कि पहाड़ों के कलेजे दहल गये। धरती का सीना कांपने लगा। उस वक्त आप के एक साथी ने आप से उनके लिए बद्दुआ और शाप के लिए कहा। मगर ऐसे भयानक माहौल में, ऐसे लरज़ा देने वाले वातावरण में, और ऐसे कलेजा चीर देने वाले समय में भी उन्हें शाप देने के बजाए और उनके लिए बद्दुआ के बजाए उनके लिए दुआओं का फूल बरसा कर आपने बता दिया कि खुदा ने आप को सारी दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। खुली बात है कि जो रहमत का समुंदर हो, जो दया का सागर हो, जो मानबता का प्रतीक हो, जो अहिंसा का रखवाला और प्रेम वो मोहब्बत का सावन हो वो दूसरों के लिए बद्दुआ कैसे

कर सकता है और लोगों को शाप कैसे दे सकता है।

आपके शत्रुओं के पास नफरतों का भयानक अंधेरा था। झूठ और धोखा की जलती हुई भट्टी थी। कीना कपट और अत्याचार की भयानक आग थी। जिसमें वो दुनिया को भस्म कर देना चाहते थे। जब की आप के पास दया का सागर था। सच्चाई का सूरज था, प्रेम वो मोहब्बत की शीतल सरीता थी। सुख और चैन की गंगा थी। जिसमें डूबा कर आप लोगों को मानवता का महान सेवक और प्रेम वो मोहब्बत का गर्वशाली प्रतीक बनाना चाहते थे। एक तरफ कीना कपट और नफरतों की आंधियां लोगों को बर्बाद करने पर तुलीं थीं दूसरी तरफ प्रेम वो मोहब्बत का पवित्र उजाला उन्हीं अंधेरों को मिटा रहा था। इसलिए सुबह की ठंडी हवाओं की तरह आप का जीवन प्रदान करने वाला पवित्र संदेश जुल्म वो सितम के तूफानों का सीना चीर कर बढ़ता रहा। सुबह के उगते हुए सूरज की लालिमा की तरह आप का क्रांतिकारी संदेश लोगों के हृदय से अंधेरों को दूर करता रहा और पवित्र दीप की तरह नफरतों की उमड़ती हुई आंधियों के भी सामने अपना मधुर प्रकाश बिखेरता रहा और मुरझाई हुई आत्मा को नया जीवन प्रदान करता रहा। जिससे कट्टर से कट्टर विरोधियों के हृदय में भी आप के पवित्र संदेश की आकाश गंगा उतरने लगी और कठोर से कठोर शत्रुओं के घर आंगन में भी आपकी श्रद्धा का झंडा लहराने लगा।

आपने लोगों को बताया कि दुनिया में जितने पैगम्बर आए सबों का एक ही दीन (धर्म) और एक ही संदेश था कि तुम सबों का मालिक और तुम सभी का पैदा करने वाला बल्कि सारे संसार का जन्मदाता एक ही है और वो है अल्लाह (जिसे लोग अपनी जबान में खुदा, ईश्वर, गॉड वगैरा के नाम से भी जानते हैं) आपने फरमाया सब उसी के बंदे और दास हैं। इसलिए उसी पर ईमान लाना चाहिए और उसी की इबादत और उसी की पूजा करनी चाहिए।

आपके द्वारा संसार ने यह क्रांतिकारी पैगाम भी सुना कि चंद्रमा और सूर्य से लेकर धरती तक, आकाश से लेकर पाताल तक सब मनुष्य के लिए हैं। रचयिता ने सृष्टि की रचना की है तो इसीलिए कि वो मनुष्य की दासता करें और मनुष्य उन पर राज्य करे। पूरा संसार मनुष्य के लिए और मनुष्य केवल

अपने ईश्वर के लिए। उसका माथा केवल खुदा के लिए, उसकी वंदना केवल संसार के रचयिता के लिए। उसका जीवन अपने मालिक के लिए। सारा संसार तो उस पर अर्पित होगा और वह मानव जाति सिर्फ अपने खुदा के सामने झुकेगा।

इस प्रकार आपने सारे संसार वालों को उसका यह महान और गर्वशाली उद्देश्य बताया कि यह संसार पूजने के लिए नहीं बल्कि रिसर्च और खोज के लिए है। इस तरह इनसान को उसका यह महान स्थान बताकर पैगम्बरे इस्लाम ने एक नये वैज्ञानिक संसार की स्थापना करके एक क्रांतिकारी युग का निर्माण किया।

आपके इस पवित्र संदेश से आज के इंसान को पहली बार यह पता चला कि चांद और सूरज पूजने के लिए नहीं बल्कि रिसर्च और खोज के लिए हैं और फिर इस खोज में जो जितना आगे बढ़ता गया वो उतना ही खुदा को पाता गया। इस आधुनिक ज्ञान पर न केवल उसकी आत्मा झूम उठी कि संपूर्ण संसार की रचना मेरे लिये है बल्कि उसे इसका भी एहसास हुआ कि वो तो अभी तक अज्ञान के अंधकार में ही भटक रहा है। अब उसके समझ में आया कि वो कितना मूर्ख है कि जिस संसार का निर्माण उसके लिए है उसे तो वो पूज रहा है और जिसने उसे बनाया उसे वो भूल रहा है। इस सच्चाई को कुर्आने पाक ने एक जगह इस तरह बयान किया। और हमने आदम की औलाद (मनुष्य) को (सारे संसार पर) श्रेष्ठता प्रदान की। ولقد کرمنا بنی آدم (سورہ الاسرا آیت ۷۰)

यही कारण है कि पहली बार लोगों ने इस्लाम द्वारा वो अज़ीम इंकेलाब देखा जिसमें मनुष्य को संसार का सबसे सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम प्राणी की महान पदवी से सम्मानित किया गया। फिर यह महान विचार अरब से चलकर पहले एशिया और अफ्रीका तक पहुंचा और उसे अपने सुगंध से सुगंधित करने के बाद योरोप पहुंचा और फिर एटलांटिक समुंद्र को पार करके यह शक्तिशाली संदेश अमरीका तक जा पहुंचा। इस प्रकार रिसर्च और खोज की दुनिया में एक नये संसार की स्थापना कर गया। जिसके कारण 20 जुलाई 1969 ई. को चांद की धरती पर मनुष्य ने कदम रख कर इस्लाम के इस क्रांतिकारी संदेश की पुष्टि कर दी कि चांद और सूरज पूजने के लिए नहीं, दंडवत और नमन करने के

लिए नहीं, बल्कि मनुष्य की सेवा के लिए बनाए गये हैं।

और उसने तुम्हारे लिए काम में लगाए जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। सब को अपनी ओर से سخر لکم ما فی السمٰوٰت وما فی الارض جمیعا منہ (الجاثیۃ آیت ۱۳)

जब तक मनुष्य किसी की गलत श्रद्धा और दास्ता में रहता है उस समय तक रिसर्च और खोज का दीप बुझा रहता है और जैसे ही श्रद्धा के फूल कुम्हलाते हैं सच्चाई का चेहरा मुस्कान भरने लगता है और रिसर्च का प्रकाश जगमगाने लगता है। खोज का दीप जलने लगता है।

अमरीकी अंतरिक्ष यात्री आर्म-स्ट्रांग (Nail ArmStrong) और उसके साथी एडविन अलडरिन (Edwin Aldrin) माईकल कोलिस (Michael Collins) का ग्रुप वो पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने एपोलो 11 (Apollo 11) पर यात्रा की और अंत में एक छोटी सी चांद गाड़ी (Eagle) द्वारा चांद पर उतरे। वहां पहुंचकर उन्होंने जो शब्द कहे वो इतिहासिक बन गये।

That's one small step for a man, one giant leap for man kind.

यह एक छोटा कदम है। मगर मानवता के लिए यह एक महा छलांग है।

ज्यादा सही शब्दों में यह पुजारियों के संसार में भयानक विस्फोट है जिससे दास्ता और दंडवत के सारे विचार नष्ट हो गये। जो मनुष्य की श्रेष्ठा की खुली पृष्टि है। यह अपोलो कोई जादुई उड़न खटोला नहीं था बल्कि यह एक वैज्ञानिक मशीन थी। जिससे इंसान ने वहां तक पहुंचने का प्रोग्राम बनाया था।

साइंसी इंकेलाब मुस्लिम दुनिया में पैगंबरे इस्लाम के जरिये आया। मगर योरोप और अमरीका ने एक विशेष विचारधारा के कारण इसे इस्लाम और धर्म से तोड़ कर सेकुलर ज्ञान के रूप में आगे बढ़ाते हुए आज विशेष स्थान तक पहुंचाया। मगर यह इस्लाम ही है जिसने उनकी पूजा और उसकी उपासना में पड़ने के बजाए उन पर रिसर्च और खोज का मार्ग दर्शा कर और वैज्ञानिक युग का निर्माण करके इस नए साइंसी युग और टेक्नालाजी संसार को जन्म दिया। जिसमें सूर्य के सामने दंडवत करने के बजाए उसके प्रकाश से बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां चलाई जा रही हैं। चांद के मधुर प्रकाश पर सिर झुकाने के बजाए उस पर कालोनी बसाने की बातें की जा रही हैं। नदियों की उमड़ती हुई धाराओं से भयभीत होकर उसकी पूजा अर्चना के बजाय उस पर बड़े-बड़े महान डेम बनाये

जा रहे हैं। समुद्र की चिंघाड़ती, चीखती लहरों से कांपने के बजाए उस पर बड़े बड़े जहाजों को चला कर और उसका सीना चीरकर उस पर अपने विजय का झंडा लहराया जा रहा है।

यह सब इस्लाम के उस क्रांतिकारी संदेश का ही परिणाम है जिसमें हमारे हृदय में क्रांति की ज्वालामुखी भड़काने वाला, आत्माओं को खुदाई महक से सुगंधित करने वाला और मस्तिष्क को सारे संसार से स्वयं के महान होने के विचार से प्रकाशित करने वाला संदेश हमें नया जीवन प्रदान कर रहा है कि

सारा जहां तेरे लिए और तू खुदा के लिए

इस समय योरोप में कई ऐसी पुस्तकें मार्किट में पाई जा रही हैं जिसमें विद्वानों ने इस सत्य को स्वीकारते हुए उन पुस्तकों का शीर्षक इस तरह लिखा है-

Muslim Contribution to Civilization

अर्बों की साइंसी उन्नति या सभ्यता में मुसलमानों का योगदान।

यहां पर फिल्प हिट्टी की प्रसिद्ध पुस्तक हिस्ट्री आफ दी अरब का एक पैराग्राफ प्रस्तुत करूंगा। वो लिखते हैं।

No People in the middle ages Contributed to human progress so much as did the arabians and the arabic-speaking peoples (P.4.)

मध्यकालीन युग में इंसानी उन्नति में अर्बों ने और अर्बी बोलने वालों ने जितना हिस्सा लिया उतना किसी कौम ने नहीं लिया।

ए. हम्बोट (A. Humboldt) फिजिक्स के बारे में कहता है।

It is the Arabs who should be regarded as the real founders of physics. (P.25.)

वास्तव में फिजिक्स का जिसे संस्थापक समझना चाहिए वो अरब हैं। इसके साथ ही साथ इतिहासकारों ने इस वास्तविकता को भी स्वीकारा है कि योरोप में अर्बों द्वारा पहुंचने वाला ही वो ज्ञान था जो उनके नये जीवन (Renaissance) का कारण बना विशेष कर प्रोफेसर हिट्टी का कहना है कि बगदाद में बैतुल हिकमत (832 ई.) के बनने के बाद अर्बों द्वारा किये गये अनुवादों से जो किताबें मार्किट में आईं उनका लेटिन भाषा में अनुवाद हुआ और जब

वो किताबें स्पेन और सेसली के माध्यम से योरोप पहुंची तो उसने वहां ज्ञान का ऐसा प्रकाश बिखेरा जिसने योरोप को ज्ञान वर्धक नया जीवन प्रदान किया। प्रो. हिट्टी के शब्दों में

This Stream was re-diverted in to Europe by the Arabs in Spain and Sicily whence it helped create the renaissance of Europe (P.307)

हिन्री पिरिंन (Henry Pirenne) इस इतिहासिक सत्य को स्वीकारते हुए इस्लाम की चौखट पर इस तरह श्रद्धा के फूल अर्पित करती है।

Islam Changed the face of the globe. The traditional order of history was overthrown.

इस्लाम ने धरती का रूप ही बदल दिया इतिहास का पुराना ढांचा उखाड़ फेंका। योरोप के प्रसिद्ध इतिहासकार चार्लिस गलेस्पिक (charles Gillespic) ने उन वैज्ञानिकों की लिस्ट बनाई है जिन्होंने मध्यकालीन युग में (सातवीं शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक) साईंस को उन्नति दी और नए साइंसी युग की स्थापना की। उसमें 132 वैज्ञानिकों में 105 का संबंध इस्लामी देशों से है।

खुदा के पैगम्बर ने मनुष्य को उसके जन्म का महान उद्देश्य बताते हुए उसका यह क्रांतिकारी मार्ग भी दर्शाया कि सारा संसार एक ही खानदान और एक ही परिवार के सदस्य और उसके मेम्बर हैं। तुम में ऊंच नीच का कोई भेदभाव नहीं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। अरब की बस्ती से लेकर दुनिया के किसी भी कोने में बसने वाला इंसान सब बराबर हैं। सभी एक खुदा के बंदे हैं और सभी हज़रत आदम की संतान और उनकी औलाद हैं। अगर तुम में किसी को कोई महांता और किसी को कोई बड़ाई मिली है तो वो खानदान और परिवार के आधार पर नहीं, कुटुंब और कबीला के कारण नहीं बल्कि सिर्फ तकवा और खुदा के खौफ की बुनियाद पर, व्यवहार और कैरेक्टर के आधार पर, ख्यालात और फिक्र की बुनियाद पर आदमी बड़ा और छोटा होता है जिसके दिल में खुदा का सच्चा खौफ है और उसके रसूल की मोहब्बत है। जिसके हृदय में लोगों से मोहब्बत का सागर उमड़ रहा है। जिसके सीने में मानवता से प्रेम का दीप जल रहा है। जिसका जीवन पवित्रता

का ताजमहल हो। जो पवित्र विचारों का प्रतीक हो। वास्तव में वही खुदा के नज़दीक सबसे महान और सबसे ज्यादा सम्मान वाला है।

संसार वालों ने एकता, समानता और बराबरी पर निर्धारित समाज की सदा कल्पना की। संसार के बड़े-बड़े विद्वानों ने, महान विचारकों ने और क्रांतिकारी शासकों ने सदा एक ऐसे समाज के निर्माण का सपना देखा जिसमें सबकों जीने का अधिकार हो। हर व्यक्ति को बराबर का सम्मान मिले। हर किसी की मान मर्यादा की पूरी-पूरी रक्षा हो सके। मगर हजार कल्पना के बावजूद, अथक कोशिशों के बावजूद, और पूरी ज्ञानरूपी पूंजी समर्पित करने के बावजूद, संसार वालों का यह सपना इतिहास के किसी भी युग में साकार नहीं हो पाया।

अगर दुनिया ने कभी इस सपने को व्यवहारिक जीवन के माथे की आंखों से देखा है तो वह सिर्फ और सिर्फ पैगम्बरे इस्लाम द्वारा निर्मित समाज में दिखाई देता है। जहां गुलाम से लेकर आका तक प्रजा से लेकर राजा (शासक) तक निर्धन से लेकर धनवान तक, हर व्यक्ति के लिए सबों के हृदय में पूरा-पूरा सम्मान था। हर कोई एक दूसरे के आदर में लीन था और हर एक की मान-मर्यादा सुरक्षित थी।

इस संदर्भ में श्री विवेकानंद का यह पत्र हमारे इस दावे की बेहतरीन पुष्टि है जिसमें उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इस्लाम की विशेषता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है।

My Experience is that if ever any religion approached to this equality in an appreciable manner, it is Islam and Islam alone.

मेरा यह अनुभव है कि अगर कभी कोई मजहब अमली मसावात तक काबिले लेहाज दर्जा में पहुंचा है तो वो इंस्लाम और सिर्फ इस्लाम है।

इस प्रकार संसार ने आपके द्वारा पहली बार यह जीवन प्रदान करने वाला पवित्र संदेश सुना कि धरती के निर्धन और गरीब से गरीब व्यक्ति को भी जीने का पूरा-पूरा अधिकार है। संसार की हर खुशी और हर सुख में उसका हर तरह का अधिकार है।

आपके समय औरतों पर सारे संसार में अत्यंत अत्याचार किया जाता था।

उन्हें समाज में कोई स्थान प्राप्त नहीं था। विधवाओं और बेवाओं को मनहूस समझा जाता था। लड़कियों का जन्म अशुभ समझ कर उसे जिंदा गाड़ दिया जाता था। आपने बताया यह बहुत बड़ा पाप है। इससे खुदा सख्त नाराज होता है। आपने समाज के इन भयानक रसमों को तोड़ कर औरतों का मान सम्मान बढ़ाया और खुद भी एक विधवा औरत से शादी करके उन्हें समाज में महान सम्मान दिलाया। लड़कियों को मनहूस समझने वाली दुनिया और अशुभ मानने वाले संसार को नया जीवन प्रदान करने वाला यह संदेश दिया कि जो व्यक्ति किसी बच्ची का अच्छी तरह पालन पोषण करके और उन्हें अच्छी तरह शिक्षित करके उसका घर बसाएगा वो मेरे साथ-साथ जन्नत में जाएगा।

इक्कीसवीं शताब्दी में औरतों का रोना सारी दुनिया ने रोया। हर जगह औरतों की बराबरी की बात की गयी। घर की चहार दीवारी से उसे निकाल कर जीवन की विभिन्न पगडंडियों में दौड़ाया गया। इस सिलसिले में इंग्लैंड सबसे आगे रहा। यहां तक की औरतों की बराबरी के अधिकार के मांग पर पहली काबिले जिक्र किताब भी लंदन से छपी। जिसका नाम था

Avindication of the rights of woman (by mary wollstonecraft 1792)

अमरीका में यह आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी में आया। जिसमें औरतों की आजादी और उनके स्वतंत्रता की बात की गयी। मगर वास्तविकता यह है कि उन्होने उसे मार्किट का माल और ऐश का सामान बनाकर निर्वस्त्र कर दिया। आज वो न घर की है और न बाजार की। हर जगह उसकी देह व्यापार के सौदागार उसकी दैहिक शोषण का व्यापार करके एवं नारीत्व का नंगा नाच नचा कर अपनी तिजोरी भर रहे। कहीं Miss World (विश्व सुंदरी) के नाम पर, कहीं फैशन के रूप में उसके बदन का कपड़ा उतारकर वासना का बाजार गरम किया जा रहा है और कहीं एडव्हर्टाइज के नाम पर उसके नग्न चित्रों से अपना मार्किट बनाया जा रहा है और जब कभी किसी औरत ने उस पर आवाज़ उठाई तो उसे फंडा मेंटलिस्ट, बैक वर्ल्ड, बुनियाद परस्त, दकियानूस और अज्ञान रूपी अंधकार का पुजारी बता कर उसकी आवाज इस तरह दबा दी गयी कि वो अपने देश की पार्लियामेंट से लेकर यो.एन.ओ. (अंतर्राष्ट्रीय संघ) तक कहीं भी इस अत्याचार के विरूद्ध आवाज नहीं उठा सकती और न

ही एडव्हर्टाइज के रूप में बनी उस एलबम पर कोई रोक लगा सकती है। लिबास पहनने और बदन ढांकने का अधिकार दिन ब दिन उससे इस शान के साथ यह साहूकार छिन रहे हैं कि वो इस अत्याचार पर आह भी नहीं कर सकती। पहले उसे जिंदा दफन करके लाश बना दिया जाता था। लेकिन अब वो चलती फिरती लाश बन चुकी है। पहले वो रो सकती थी लेकिन अब उसे आह करने की भी इजाज़त नहीं। औरतों की आजादी और उनकी स्वतंत्रता के नाम पर उठने वाले आंदोलनकारियों ने नारा दिया। काफी नहीं पालिसी बनाओ

Don't make coffe, make policy

मगर वास्तविकता यह है कि जब वोह पालिसी बनाने के लिए घर से बाहर निकली तो वोह मार्किट का खिलौना बन गई, फैशन की दुनिया में व्यापार का माल बन गई, एडव्हर्टाइज के संसार में दूसरों का माल बेचने के लिए उसे खुद को निर्वस्त्र करना पड़ गया।

पालिसी बनाने के चक्कर में न सिर्फ वे काफी बनाना भूल गई बल्कि मां की ममता, शौहर की मोहब्बत, पारिवारिक प्रेम भी उसे भूल जाना पड़ा। पालिसी के नाम पर उसे ऐसे मार्ग पर चलना पड़ गया जहां न सिर्फ वो वासना के भेंट चढ़ गई बल्कि इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मन, अमरीका हर जगह उसका दैहिक शोषण करने वाले व्यापारी गिध की तरह मंडराने लगे। यहां तक कि ह्युमन राईटस (HUMAN RIGHTS) और महिला अधिकार (WHOMEN RIGHTS) के प्लेटफार्म के पास, अंतर्राष्ट्रीय संघ (U.N.O) के आफिस के नज़दीक बल्कि विश्व सुपर पावर व्हाईट हाऊस में भी उसका दैहिक शोषण किया गया। अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और मोनिका लेविंस्की का प्रकरण आज विश्व प्रसिद्ध है और जब औरत ने उस पर चीखना चाहा तो उसे कुछ टके और कुछ सिक्के थमा कर उसे उसकी हकीकत याद दिला दी गई कि तुम सिर्फ व्यापार का माल हो और हम व्यापारी। जिससे महिला अधिकार और मानव अधिकार के सारे खोखले नारे और झूठे वादे जग जाहिर हो गये।

इस तरह पालिसी के नाम पर वो व्यापार का माल ही नहीं बनी बल्कि

एड्स के फैलाने का सबसे बड़ा साधन भी बन गई। अमरीका, इंग्लैंड, डेनमार्क, नार्वे, फ्रांस और जर्मनी जैसे धनीवान और शक्तिशाली देश आज इस अज़ाब और इस कहर में फंसे मौत की गिनतियां गिन रहे हैं। वहां मां की ममता मर चुकी है। पति प्रेम नष्ट हो चुका है। सामाजिक ढांचा टूट चुका है। पारिवारिक संबंध बरबाद हो चुका है। बच्चे मां की मोहब्बत के लिए तरस रहे हैं। बीवी शौहर के प्यार के लिए तड़फ रही है। शौहर बीवी की बेवफाई पर सीना पीट रहा है। जबकि पवित्रता की छत्रछाया में जीवन बिताने वाला मुस्लिम समाज आज भी नारीत्व का रक्षक बना है और एड्स के रूप में अज़ाब वो कहरे इलाही से सुरक्षित दूसरों को जीवन भरा संदेश दे रहा है।

मगर इस्लाम ने उसे बेशुमार हुकूक देकर न सिर्फ घर की मलका बनाया बल्कि आखिरत में जन्नत का ज़रिया बनाकर एक आधुनिक युग की स्थापना करते हुए उसे जो मुकाम दिया वो आज की इक्कीसवीं सदी भी नहीं दे सकी। खुसूसन शौहर की जायदाद और बाप की विरासत में उसने जो क्रांति कारी कदम उठाए वो इतने प्रभावशाली थे कि जो लोग सदा इस्लाम को मिटाने का षडयंत्र रचते रहे वो भी उसे स्वीकार करने पर मजबूर हो गये। यहां मैं जे.एम. राबर्टसन की किताब की ओर आपका ध्यान आकर्षण चाहूंगा वो लिखते हैं

It's coming was in many ways revolutionary. it kept women, for example, in an inferior position, but gave them legal rights over property not available to women in many European countries until the nineteenth century.-

J.M. Roberts The pelican History of the world Newyark, 1984 P. 334.

इस्लाम का आगमन कई दिशाओं में क्रांतिकारी था। उदाहरण के रूप में उसने अगरचे औरतों को कम दर्जा दिया मगर उसने उन्हें संपत्ति में जो न्यायिक अधिकार दिया। योरोप के अधिकतर देशों में उन्नीसवीं शताब्दी में भी औरतें उन अधिकारों से वंचित थीं।

इसी संदर्भ में मिस्टर राजेंद्र सचर रिटायर्ड चीफ जस्टिस देहली हाईकोर्ट का एक स्टेटमेन भी पढ़ते चलिए

Mr. Justice Sachar said that historically Islam had been very

liberal and progressive in granting property rights to women. the fact that there were no property rights to hindu women untill 1956 when the hindu code bill was passed whereas islam had granted these rights to muslim women over 1400 years ago.

(The statesman, Delhi, April 26, 1986)

मिस्टर सचर कहते हैं कि इतिहासिक तौर पर औरतों को संपत्ति पर अधिकार देने के लिए इस्लाम स्वच्छ विचारक एवं विकसित धर्म साबित हुआ है। यह एक सच्चाई है कि हिन्दू कोड बिल 1956 बनने से पहले हिन्दू महिलाओं को जायदाद में कोई अधिकार नहीं था। जबकि इस्लाम मुस्लिम औरतों को बुनियादी स्तर पर 1400 वर्ष पहले ही यह अधिकार दे चुका है।

इस तरह इस्लाम ने इस ऐतिहासिक युग में औरतों के हितों की रक्षा करके एक तरफ उन्हें घर की मलका बनाया तो दूसरी तरफ उन्हें आखिरत की पूंजी बताकर उनको सम्मानित किया।

पैगम्बरे इस्लाम ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बताकर वैज्ञानिक युग का सिर्फ निर्माण ही नहीं किया। गुलामों की मान-मर्यादा बढ़ाकर उन्हें समाज में ऊंचा स्थान ही नहीं दिलाया और औरतों को मान-सम्मान देकर उन्हें जीने का पूरा-पूरा अधिकार ही नहीं दिया बल्कि अपने सिद्धांतों के आधार पर एक ऐसे पवित्र समाज का निर्माण भी किया जो अपने समय का सबसे ज्यादा प्रगतिशील, क्रांतिकारी और शिक्षित समाज होने के साथ ही साथ सब से ज्यादा अमन वो शांति और सुख वो चैन वाला भी समाज था। जिसमें हर तरफ सभी के लिए मान सम्मान की आकाश-गंगा जगमगा रही थी। हर व्यक्ति का हृदय सबों के लिए आदर और सम्मान की सुगंध से सुगंधित था। औरतों और नारियों की मान-मर्यादा और बच्चियों के लिए प्रेम वो मोहब्बत का सागर जिसमें हर तरफ लहरें मार रहा था। हर मनुष्य के हृदय में सारे संसार को मनुष्य की दासता और उसकी गुलामी से निकाल कर खुदा की खुदाई में देने का सच्चा जज़्बा था। हर औरत को पूरी-पूरी इज़्ज़त और पूरा-पूरा सम्मान के साथ और हर बच्ची को जीने का संपूर्ण अधिकार प्राप्त था।

आपके द्वारा निर्मित गौरवशाली समाज की पवित्रता देखकर राष्ट्र पिता कहे

जाने वाले गांधी जी का एक कथन भी दोहरा दूं जिसमें आप कहते हैं

मैं पूरे विश्वास और पूर्ण निष्ठा के साथ कहता हूं कि इस्लाम ने तलवार द्वारा विजय प्राप्त नहीं की। बल्कि उसके बढ़ने का रहस्य (रसूले पाक) हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहिवसल्लम) का खुलूस, वादों का पूरा करना, गुलामों, दोस्तों और अज़ीज़ों से बराबर का प्रेम था। आपकी वीरता, बेखौफी और अल्लाह पर और अपने पर भरोसा। लेहाज़ा यह कहना गलत है कि इस्लाम तलवार की शक्ति से फैला। बल्कि उसकी प्रगति और उन्नति में उक्त विशेषताएं नीहित थीं।

(Quoted in the vindication of the prophet of Islam P.P. 26, 27)

आपने जब मक्का पर विजय प्राप्त किया तो खान-ए-काबा पर सबसे पहली अजान के लिए जिसे आगे बढ़ाया वो हज़रत बेलाल थे जो खुद सूडानी थे। जिनके चेहरे का रंग काला था। जिनके होंठ मोटे-मोटे थे और जो खुद गुलामी की जिंदगी गुज़ार चुके थे। उस समय कुछ लोगों ने कहा कि इस काले सूडानी गुलाम की जगह कोई ऊंचे परिवार का गोरा नारा और खूबसूरत शक्ल का कोई सरदार अज़ान देता तो अच्छा था। मगर आपने फरमाया कि खुदा के नज़दीक काले गोरे का कोई फर्क नहीं। अर्बी और सूडानी में कोई अंतर नहीं। मैं संसार के बनाए हुए इस ऊंच और नीच की नकली दीवार को ढाने के लिए आया हूं और गुलामी की हर जंजीर तोड़ने के लिए भेजा गया हूं। इसलिए दुनिया की सबसे पहली मंस्जिद खान-ए-काबा पर जो अज़ान देगा वो हज़रत बेलाल होंगे। दुनिया ने पहली बार देखा कि आप के द्वारा एक गुलाम को इतना सम्मान दिया गया कि वो बेलाल से हेलाल (सम्मान का चांद) बन गये। बड़े-बड़े लोग उन्हें अपना सरदार समझने लगे।

बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों के जुल्म से घबराकर गुलामों के हितों की रक्षा के लिए कई कानून बनाये गये। अफरीका के कानों और खदानों से कोयला निकलवाने के लिए अंग्रेजों ने जो अत्याचार ढाए। उसे सुनकर रूह कांप उठती है। उन खदानों में लाखों लोगों से मुफ्त मजदूरी ली जाती और उन्हें थोड़े से भोजन पर गुजारा करने पर मजबूर किया जाता। इसके लिए ऐसे भयानक हथकंडे इस्तेमाल किये जाते जिन्हें सुनकर मिस्र के फिरऔनों की

याद ताजा हो जाती है। जिसका परिणाम यह हुआ कि मजदूरों और गुलामों के हितों की रक्षा के लिए आंदोलन चलने लगा। जिससे घबराकर लोगों ने उनकी रक्षा के लिए नये-नये संविधान बनाए। मगर वास्तविकता यह है कि आज भी कमजोरों के साथ वही सलूक किया जा रहा है और आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी अंतर्राष्ट्रीय संघ के नाक के नीचे कई देशों को गुलामी का जीवन बिताना पड़ रहा है। अंतर केवल इतना है कि पहले वाईस राय भेजे जाते थे और अब वहीं के लोगों को खरीद कर वाईस राय के बजाय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मलिक और शाह जैसे शब्दों से पुकारा जाता है। इस संबंध में न तो अंतर्राष्ट्रीय संघ कुछ बोल सकता है और न ही मानव अधिकार की रक्षा का नारा लगाने वालों को बोलने की हिम्मत है।

यह एज़ाज और यह विश्वव्यापी परिवर्तन एवं जागरूकता लाना सिर्फ पैगम्बरे इस्लाम की शान थी जिन्होंने अपने क्रांतिकारी शब्दों से संसार का नक्शा बदल दिया और सोचने समझने का ज़हन बदलकर एक ऐसे व्यक्ति को जो गुलामी और दासता का जीवन बिता चुके थे। उन्हें इतना ऊंचा मान-सम्मान दिया कि आज का संसार चाह कर भी वैसा नहीं कर सकता।

चूंकि हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) खुदा के आखरी पैगम्बर थे। इसलिए आपकी जिन्दगी भी निहायत सादा थी। आप अरब देश के सबसे शक्तिशाली और महान शासक थे। आप के सामने बड़े-बड़े सम्राटों ने सिर झुका दिया था। मगर खुद आपकी जिंदगी इन्तेहाई सादा थी। घास-फूंस की छोटी सी झोपड़ी में आपने सारी जिंदगी गुज़ार दी। टूटी हुई चटाई पर बैठकर लोगों को खुदा का पैगाम सुनाया और फटे पुराने बिस्तरों पर लेटकर आराम किया। आपके पास न तो कोई बाडीगार्ड था न कोई पुलिस। न कोई अंगरक्षक था न ही कोई कमांडो। जिस समय आप इस संसार से रूखसत हुए। उस समय लाखों वर्ग मील पर आप का शानदार शासन चल रहा था।

मगर आपके घर का यह आलम था कि छोटी सी झोपड़ी में चिराग़ तक जलाने का तेल नहीं था। यहां तक कि वो आखरी रात जो आपने इस दुनिया में बसर की। उस रात आप की छोटी सी झोपड़ी में उधार मांग कर एक चिराग़ जलाया गया।

संसार बदल चुका था मगर खुदा का आखिरी पैगम्बर शुरू से आखिर तक एक ही हाल में रहा। इस तरह आप की मुकद्दस जिंदगी का एक-एक लम्हा, आप के पवित्र जीवन का एक-एक पल और संसार को नया जीवन प्रदान करने वाले आपका हर किरदार और हर चरित्र आपके आखिरी पैगंबर, आपके अंतिम ईश्वरीय दूत और आप के लास्ट प्ररोफेट होने का एलान कर रहा है इसलिए आप के हर एक बोल में, आपके हर कथन में और आपकी हर बात में हमारे लिए क्रांतिकारी संदेश और पवित्र जीवन का रहस्य छुपा है। जिसमें प्रेम वो मोहब्बत की मधुर सरीता है। एकता और समानता का पवित्र संदेश है। दुनिया और आखिरत की सच्ची सफलता है। प्रगतिशील और शिक्षित समाज की आधारशिला है। पत्थरों के युग से लेकर वैज्ञानिक काल तक जीवन बिताने का मूल सूत्र है।

जिससे धरती भी जगमगाने लगती है । आकाश भी झूमने लगता है। समाज भी गर्वांचित हो उठता है और आत्मा भी पवित्रता की सुगंध से सुगंधित होकर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने लगती है ।

चरणों में तेरे आकाश है । मन में बसी तेरी बात है ॥
गाए ईश्वर तेरी मल्हार । ए सारे नबियों के ताजदार ॥

☛ यह कुरान एक संदेश है संपूर्ण मानव जाति के लिए, और यह भेजा गया है (हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के द्वारा) ताकि उनको इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए। और वे जान लें कि वास्तव में ईश्वर बस एक ही है, और जो बुद्धिमान हैं वे होश में आ जाएं।

(कुरआन पाक – सूरए इब्राहीम आयत नं. 52)

☛ (Mohammed) Was Born within the full Light of History.

(The Encyclopedia Americans (1961) Vol, 19 A 292

मोहम्मद इतिहास के सपूर्ण प्रकाश में पैदा हुए।

ईद मिलादुन्नबी और मानव अधिकार

जिस तरह उगता हुआ सूरज हर रोज एक नया संदेश लेकर आता है और रात के अंधेरों का सीना चीरकर धरती पर अपनी रौशनी बिखेरते हुए नये इंकलाब की खुशखबरी देता है। इसी तरह ईद मिलादुन्नबी का मुकद्दस मौका अपने जबाने हाल से हर साल यह खुदाई पैगाम सुनाता है कि जो कोई खुदा के मुकद्दस दीन इस्लाम की छत्रछाया में आ जायेगा वो ना सिर्फ सैकड़ों - हजारों माबूदाने बातिल और झूठे खुदाई दावेदारों की परसतिश और उसकी उपासना से नजात पा जायेगा बल्कि वो खुद भी इतना बुलंद हो जायेगा कि जहां सारा संसार उसकी अजमतों का गीत गाते हुए जबाने हाल से यह एलान कर रहा होगा कि हम सब तेरे लिए, यह सारी कायनात तेरे लिए, यह सारा संसार तेरे लिए, यह सारा जहां तेरे लिए... और ... तू खुदा के लिए।

ईद मिलादुन्नबी का मुकद्दस मौका जहां जबाने हाल से यह ऐलान कर रहा है कि उस माहे मुकद्दस की बारह तारीख को रोजा रखना अपने अंदर अजीम फजीलत और रूहानी बरकत रखता है - रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैही वसल्लम की पैदाइश की खुशी में घरों को सजाना और संवारना अपनी आखिरत को सजाना और संवारना है। इस मौके पर चिरागां करना अपनी कबर की तारीकी दूर करना है। वहीं हमें यह भी याद दिलाता है कि इसी तारीख को दुनिया में वो अजीमुश्शान और तारीख साज इंकेलाब भी बरपा हुआ जिसने तारीख में पहली बार अरब वो अजम, पूरब और पश्चिम की दीवारें तोड़ कर सारे इंसानों को इंसानों की गुलामी से आजादी देकर आखिरत की लौ इतनी तेज कर दी जहां खुदा को राजी करना और उसकी मर्जी के मुताबिक जिंदगी गुजारना इंसान का सबसे अहम और सबसे अव्वल मसाला बन गया। नफरत वो हेकरात 'जुल्म वो सितम' बरबरियत वो सरबियत की भट्ठी में जलती हुई इंसानियत को नई तारीख देकर सारे संसार को अमन वो शांति का पैगाम सुनाकर 'इत्तेफाका और वो इत्तेदाह का संदेश देकर एक ऐसे इंकेलाब की बुनियाद डाल गया जिसकी बेमिसाल तारीख को देखकर अमरीकी एन्साइक्लोपीडिया का अंग्रेज लेखक हैरत और आश्चर्य के आलम में चीख पड़ा।'

Its advant changed the course of human history.

इस्लाम ने इंसानी इतिहास का धारा ही मोड़ दिया। इसी ईद मिलादुन्नबी की बदौलत इंसानी गुलामी में जकड़ी हुई दुनिया और खानदानी बादशाहतों की आकाई तले दबी दुनिया ने आजादी की सांस ली। उनके पैरों पर पड़ी गुलामी की जंजीरें टूटने लगीं। हर इंसान आजादी की दुनिया में जीवन बिताने लगा। फिर एक दिन दुनियां ने यह भी देखा की जो आजादी का संदेश १२, रबीउल अव्वल को दुनिया को सुनाया गया था वो एक आंदोलन के रूप में धीरे-धीरे बढ़ता रहा। यहां तक कि हुज्जतुल वेदा में अपनी आखरी मंजिल पर पहुंच कर सारी दुनिया में यह एलान कर गया...

لَا فَضَلَ لِعَرَبِیْ علی عَجَمِی ولا العجمی علی عربی ولا اسود علی احمر ولا
لاحمر علی اسود الا بدین دلقوی کلکم بنو آدم و آدم من تراب (۲۱)

ला फजला ले अरबी वला ले अजमी अला अरबी। दुनिया में किसी अर्बी को किसी अजमी पर और किसी अजमी को किसी अर्बी पर, किसी काले (सूडानी) को किसी गोरे पर और किसी गोरे (अंग्रेज) को किसी काले पर कोई फजीलत नहीं। तुम सब हजरते आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से पैदा किये गये।

संसार वालों ने आजादी और बराबरी का जो सपना सदियों बाद देखना शुरू किया इस्लाम ने न केवल उसका आंदोलन छेड़ा बल्कि उस सपने को साकार करके दिखा भी दिया।

इंसानी बराबरी 'मसावात, 'मानव अधिकार जिसे लोग सपने में नहीं सोच सकते थे। विचार की दुनिया में भी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। उसका न सिर्फ इस मौके पर एलान किया गया। बल्कि व्यवहारिक जीवन में उसे करके दिखा भी दिया गया। उसी सिद्धांत पर आधारित उसने एक ऐसे समाज का निर्माण किया जिसने आगे चलकर न केवल इंसानी इतिहास को एक नया मोड़ दिया बल्कि सम्राट और राजपाट की जगह प्रजातंत्र, गुलामी और दास्ता की जगह हर मनुष्य को बराबरी का अधिकार और जाति ऊंच-नीच की जगह समानता और एकता का वो इतिहास रचा जिसने एशिया से लेकर योरोप और अमरीका तक हर जगह एक नये समाज, एक नये संविधान

और एक नये क्रांतिकारी विचारधारा की स्थापना की।

समानता और मानव अधिकार, जिसका खुतबा आज सारे संसार में पढ़ा जा रहा है। जिसके लिए हर रोज नये-नये प्रस्ताव पारित किये जा रहे हैं। जगह-जगह कांफ्रेंसें की जा रही है। आमतौर पर योरोप वाले उसका संबंध मसीह से पांचवी शताब्दी पहले यूनानियों से जोड़ना चाहते हैं। विशेषकर अरस्तु और अफलातून को उसका विचारक बताने की नाकाम कोशिश करते हैं। कुछ लोगों की नजर इंग्लैंड के मेगना कार्टा पर पड़ती है। जिसे तेरहवीं शताब्दी में हेरी द्वितीय के बेटे और रेचर्ड शेर दिल के भाई बादशाह जान (1199, 1216) ने 15 जून 1215 ई. को जारी किया था। जो हकीकत में कुछ दरबारियों के दबाओं का नतीजा था। उसे न केवल मानव अधिकार के इतिहास में बल्कि संपूर्ण इतिहास में विशेष अहमियत दी जाती है यहां तक कि मशहूर अंग्रेज विचारक वोल्टर के अनुसार उसे मंशूरे आजादी तक करार दे दिया गया। इसी तरह बर्तानवी पार्लियामेंट का 1355 ई. में मंजूर करदः कानूने चारा जोई 1679 का कानून बेजा कैद और 1689 का एलान करदः कानून हुकूक पर गौर करें या अमरीकी सटेट वर्जीना से जारी करदः मंशूर हुकूक अमरीकी थामिस जीफर का सन् 1676 में बनाया हुआ एलाने आजादी, 1779 में अमरीकी कानून के दस तरमीमात पर गौर करें या फिर 1789 में फ्रांस के बिल आफ राईट के पृष्ठभूमि पढ़ें। हर जगह उनका तअल्लुफ मानवता अधिकार से कम और राज्य रक्षा से ज्यादा जुड़ा दिखाई देगा। यहां तक कि इस सिलसिले की आखरी कड़ी 10 दिसंबर 1948 को जारी होने वाला संयुक्त राष्ट्र संघ का आलमी मंशूर भी हालात के पसे मंजर और कुछ विशेष शक्तियों की रक्षा से आगे नहीं बढ़ सकता।

मगर ईद मिलादुन्नबी के मौके पर इस सिलसिले में जिस आंदोलन की स्थापना की गयी थी। हज्जतुल वेदा के मौके पर वो न सिर्फ अमलन नाफिज कर दी गयी बल्कि मालूम तारीख में दुनिया ने पहली बार यह देखा कि सारे इंसान एक खानदान 'एक परिवार' और एक कबीला वाले बन कर खुदाई पैगाम के अलमबरदार नजर आ रहे हैं। यह मेनीफेस्टू लगभग 40 धाराओं पर सम्मिलित है जिस के मधुर प्रकाश से आज सारा संसार जगमग जगमग नजर आ रहा है और जिस के सुगंध से बड़ी-बड़ी विश्वविद्यालय भी सुगंधित हो

रही हैं। जिसकी महत्ता के समक्ष बड़े-बड़े विचारक और शिक्षा शास्त्री भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नजर आते हैं।

सदियों की लगातार कोशिश 'दिन-रात की मेहनत' बड़े-बड़े विचारकों की हर समय की कोशिशों के बावजूद दुनिया आज तक वहां न पहुंच सकी जहां रसूले अर्बी (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) ने हमें सदियों पहले पहुंचा कर एक ऐसे हसीन और खूबसूरत समाज का निर्माण किया था जिस पर आज भी आकाश गंगा न्यौछावर हो रही है। जिस के पवित्र पवन से आज भी हृदय के आंगन में खुशियों के कंवल खिलने लगते हैं और जिसकी कल्पना ही से मानवता का सिर गर्व से उठने लगता है।

इंग्लैंड का मेगना कार्टा आप के ऐलान के 583 वर्ष बाद जारी हुआ। फिर 1157 साल बाद फ्रांस का और 1159 साल बाद अमरीकी बिल आफ राईट का दुनिया को पता चला। यहां तक कि 1316 साल बाद संसार के महान विचारकों की कोशिशों के बाद 10 दिसंबर 1947 को संयुक्त राष्ट्र संघ का मेनीफेस्टू दुनिया के सामने आया। मगर उनमें वो कौन सा मेनीफेस्टू है जिससे दुनिया में अमन वा शांति कायम हुई? वो कौन सा कानून है। जिसने सभी को एकता समानता और बराबरी की डोर में बांध कर दिखा दिया? वो कौन सा संविधान है जिसने अलजजाएर, बूसीनिया, अफगानिस्तान और ईराक के सिसकते तड़पते बच्चों और मजलूम औरतों की हिफाजत का बेड़ा उठाया?

आज शिक्षा के प्रकाश से प्रकाशित इस युग में भी साईंसी उन्नति के बावजूद हर जगह जुल्म का नंगा नाच नाचा जा रहा है। अत्याचार की भयानक घटाओं में मानवता दम तोड़ रही है और संसार के अत्याचारी, निर्दोष लोगों की तड़पती हुई लाश पर विजय समारोह का आयोजन कर रहे हैं। मगर खुदा के आखरी पैगंबर, प्यारे रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने सदियों पहले जो मिशन काएम किया था और अपने जीवन के आखरी हज के मौके पर सारे संसार वालों को एकता समानता पर आधारित जो पवित्र संदेश दिया था। न केवल उस पर आधारित एक पवित्र समाज का निर्माण कर आपने दिखा दिया बल्कि वो संदेश आज भी इतना शक्तिशाली और क्रांतिकारी है कि जहां भी वो होता है वहां एक नया इतिहास रचता है और एक नया संसार बसाता है। जिसमें प्रेम और मोहब्बत के कंवल खिलते हैं। एकता और मानवता

का प्रकाश फूटता है। अमन व शांति की आकाश गंगा उतरती है।

इस मौके पर मैं बरनाड शाह (1856-1950) के उस कथन को लिखता चलूं जिसमें उसने इस दुनिया में अमन व शांति के लिए हजरत मोहम्मद साहब की तमन्ना करते हुए कहा था कि अगर आज मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) दुनिया के डिक्ट्रेट होते तो वो सारी समस्या इस तरह हल कर देते कि जिससे दुनया में अमन व शांति कायम हो जाती। हर जगह खुशी व मसर्रत के फूल खिलने लगते। यही वो चीज है जिसकी आज की दुनिया में हमें सबसे ज्यादा जरूरत है।

A Man like mohammed were to assume the dictator ship of the modern word. He would solve its problems in a way that would bring it much needed peace and happiness.

(27 जून 1999)

☛ My Experience is that if Every Any Religious approached to this equality in An Appereciable Manner, It is Islam and Islam Alone

मेरा अपना अनुभव है कि किसी धर्म ने पूर्ण रूप से समान अधिकार प्रदान किया है तो वो केवल इस्लाम और सिर्फ इस्लाम है।

(स्वामी विवेकानंद पत्र संग्रह 175)

☛ The Central Doctrine Preached By Mohammed to His Contemporariesin Arabia... though Irresistible in the Onslought of their Arms were all Conquered in their turu By the Faith of Islam.

(Introcution to George Sale's Translation of the Zaran P. V99 By Sir. E. Denison Ross)

(हज़रत) मोहम्मद का संदेश एक ईश्वर की भक्ति और पूजा करना था। यही संदेश उन्होंने अरब वालों को दिया।... ईश्वर भक्ति और सदगुण इस्लाम के प्रसार और प्रचार में इस्लामी सिपाहियों के **शस्त्रों से भी अधिक शक्तिशाली थी।**

इस्लामिक समानता और इक्कीसवीं सदी

खानदानी ऊंच नीच और नसली बर्तरी (पैतृक मान मर्यादा) का खातिमा और उसके अंत के साथ संसार के तमाम लोगों में समानता और बराबरी की कल्पना एक ऐसा सपना है जिसे दुनिया के तमाम मुफक्केरीन 'मुसन्नेफीन' मुदब्बेरीन और फलसफियो (विचारकों, विद्वानों और राईटरों) ने सदियों से देखा और सदा उसकी कल्पना की। और आज भी उसकी कल्पना की जा रही है। मगर इसके बावजूद दुनिया सदियों से नस्ली बरतरी और खानदानी घमंड के दलदल में हमेशा से फंसती रही है। इतिहास के हर युग में यह विचार धारा देश की उन्नति और मनुष्य के विकास के लिए भयानक रोग बनकर पूरे समाज को घुन की तरह चाटती रही है। कुछ जातियों ने तो पूरे समाज को लिंग भेद के स्तर पर विभाजित कर रखा था। जिसके कारण पूरी इंसानी नस्ल और मनुष्य जाति के साथ अन्याय और अत्याचारी का न मिटने वाला सिलसिला युग-युग से चल पड़ा।

मगर इतिहास में खुदा के आखरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम वो प्रथम व्यक्ति हैं। जिन्होंने जात-पात, ऊंच-नीच को खत्म करके धरती पर पहली बार एक ऐसे समाज का निर्माण करके दिखा दिया जिसमें हर व्यक्ति को संपूर्ण स्वतंत्रता, उसके लिए हर प्रकार की समानता और उसे सफल और सुंदर जीवन बिताने के लिए हर तरह का अधिकार प्राप्त था। दुनिया के महान विचारकों ने, क्रांतिकारी विद्वानों ने और ऐतिहासिक समाज सुधारकों ने सदियों जिस समाज की कल्पना की और जिस सुसायटी का सपना देखा उसका सही निर्माण, सच्चा स्वरूप और वास्तविक विकास आपके पवित्र जीवनकाल में ही देखा गया। जिसमें एक बड़े से लेकर छोटे तक, एक आका से लेकर गुलाम तक एक अर्बी से लेकर गैर अर्बी तक, एक शहरी से लेकर देहाती तक , एक मर्द से लेकर औरत तक और राजा से लेकर प्रजा तक हर व्यक्ति और हर मनुष्य को बराबर का अधिकार प्राप्त था। जहां देखिए समानता के फूलों की मुसकान थी। जिधर निकल जाईये एकता के दिए जल रहे थे और जिस जगह पहुंच जाईये हर व्यक्ति स्वतंत्रता, समानता और एकता के छत्रछाया में अपने जीवन को सफल बनाता दिखाई दे रहा था। इस्लाम के इस ऐतिहासिक और क्रांतिकारी निर्माण को

हर इंसाफ पसंद और गंभीर सोच रखने वाले व्यक्ति ने सदा स्वीकार किया। न केवल भारत बल्कि योरोप और अमेरिका के महान विचारकों और विद्वानों ने इस विषय पर लेख लिखकर खुले शब्दों में इस्लाम को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मैं इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद जी के एक पत्र को उदाहरण के रूप में पेश करूंगा जिसे उन्होने 18 जून 1898 को अल्मोड़ा से अपने दोस्त सरफराज हुसैन (नैनीताल) को लिखा था।

My Experience is that if ever any religion approached to this eqality in appreciable manner, it is Islam and Islam Alone.

मेरा अपना खुद का अनुभव है कि अगर कभी किसी भी धर्म ने लोगों में समानता और बराबरी करके दिखाया है तो वो इस्लाम और सिर्फ इस्लाम है।

(पत्र नवंबर 175)

डाक्ट्री दृष्टिकोण से फितरते इंसानी और मनुष्य की प्रवृत्ति में बहुत से अंतर और कई प्रकार के भेद पाये जाते हैं। मगर यह अंतर और यह भेद पक्षपात का वातावरण निर्माण करने या पारिवारिक समृद्धि बनाये रखने के लिए नहीं है। बल्कि एक दूसरे को परिचय और एक दूसरे को पहचान के लिए है। इस वास्तविकता को इस्लाम ने अपने पवित्र संदेश और खुदाई किताब कुर्आने पाक के लिए सूरए हूजरात में (आयत नं. १३) इस प्रकार दर्शाया है -

يا ايها الناس انا خلقنكم من ذكر وانثى وجعلنكم
شعوبا وقبآئل لتعارفوا ان اكرمكم عند الله اتقكم ⑬

ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और बहुत सी जातियां और वंश बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के यहां सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वही है जो तुममें सबसे अधिक खुदा का डर रखता है।

मनुष्य में मतभेद और लिंग भेद का कारण तो एक दूसरे से पहचान, परिचय और आपसी सहयोग था। मगर जब मनुष्य ने खुदाई हिदायत वो रहनुमाई और उसके दर्शाये हुए सुंदर मार्ग से बगावत करके खुद के बनाये हुए कानून के अंधकारों में भटकना शुरू किया तो बहुत सारी बल्कि अनगिनत बुराईयों के साथ पारिवारिक महानता ही नहीं बल्कि खुदा से बराबरी का भी सपना देखने

लगा। जिसने भूतकाल में फिरऔन नमरूद हामान और शद्दाह जैसे कातिल, अत्याचारी और दुराचारी राजाओं और सम्राटों को ही जन्म नहीं दिया बल्कि आज के युग में भी ड्राविन, हिटलर, मुसोलिनी और बुश जैसे क्रूर, घमंडियों और राक्षसों का जन्मदाता बना जिन्होंने धरती पर बसने वाले इंसान के साथ अत्याचार का वो रिकार्ड तोड़ा, आतंकवाद को इस तरह बढ़ावा दिया और मानव के खून से धरती को इस प्रकार लाल किया कि उसकी कल्पना उस समय भी नहीं की जा सकती थी जिसे डार्क एज या पत्थरों का युग कहा जाता है।

यह विचार जब भी आगे बढ़ा दुनिया में कुफ्र और शिर्क की आंधियां चलने लगी। रक्तपात का बाजार गर्म होने लगा। इंसानी जान वो माल की बर्बादी समाज का मुकद्दर बन गयी और फिर इस असुर सोच ने और इस निम्न विचार ने अनगिनत झूठे खुदाओं को जन्म देकर इंसानियत की पेशानी को उनकी चौखट पर झुकने पर मजबूर कर दिया जिसका परिणाम यह निकला कि ठोकरों के पत्थरों से लेकर आसमान के चांद और सूरज तक हर जगह उसका यह गौरवशाली सर एक बहके हुए शराबी की तरह झुकने लगा। अपनी मनुष्यता का सबसे महान सम्मान उनके कदमों पर अर्पित करने में यह अपनी महानता समझने लगा और उसी में उसे सफलता दिखने लगी। चांद और सूरज की पूजा से भयभीत मस्तिष्क का लाभ उठाते हुए कुछ चालाक और कुछ अनंतभेदी राजाओं ने अपना खानदानी संबंध उनसे जोड़कर मनुष्य को युग-युग की गुलामी और दासता के लिए मजबूर कर दिया। इसी सोच और विचार ने भारत में सूर्यवंशी और चंद्रवंशी परिवार को, मीसूपुटामिया (ईराक) की धरती पर नमरूदी खानदान को और मिश्र की धरती पर फिरऔन को जन्म दिया जिन्होने सदा लोगों को अपना दास समझ कर उन पर शासन किया।

इस सिलसिले में मिश्र के उन्नीसवीं शाही खानदान से तअल्लुक रखने वाला फिरऔन राम सीस द्वितीय जिसका शासनकाल तेरहवीं शताब्दी ईसा पूर्व (1304 से 1237 तक) है। जो न सिर्फ खुदा के मुकद्दस पैगंबर हजरते मूसा अलैहिस्सलाम के समय का है बल्कि कुर्आने पाक में भी उसके सिलसिले में काफी प्रकाश डाला गया है। उसका यह कौल हमारे दावे की आज भी पुष्टि कर रहा है जो अबू सम्बल (मिश्र) के मंदिर में आज भी मौजूद है जिसमें फत्ताह नामक देवता रामसीस से

कहता है- मैं तेरा पिता हूं मैंने तुझे एक देवता की तरह जन्म दिया है। उसी में रामसीस अपने देवता फत्ताह से कहते हैं - मैं तेरा पुत्र हूं तुने मुझको अपनी तरह बनाया राका पुत्र रामसीस जो अमृत्व प्राप्त रहेगा।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि पिछले समय में जात-पात और ऊंच-नीच के भेदभाव ने मनुष्य को कितने जाति और कितने वंश में बांट रखा था मगर इस्लाम के पवित्र संदेश ने जहां पूरे विश्व में एक क्रांतिकारी इतिहास को जन्म दिया वहां परिवार का भेदभाव और ऊंच-नीच के मनगढ़ंत विचार को भी जड़ बुनियाद से उखाड़ कर इंसानी बराबरी और समानता के आधार पर एक ऐसे आधुनिक समाज की बुनियाद डाली जहां तकवा वो तहारत (मानवता एवं पवित्रता और खुदा का डर) ही महांता की आधारशिला बना।

किसी अर्बी को किसी अजमी (गैर अर्बी) पर और किसी अजमी को किसी अर्बी पर फजीलत (बढ़ोतरी) नहीं। किसी काले को किसी गोरे पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई फजीलत नहीं। सुन लो तुम सबकी सब आदम की संतान हो जो मिट्टी से बनाये गये। आपने सिर्फ एलान ही नहीं फरमाया बल्कि उसकी बुनियाद पर एक ऐसे पवित्र समाज का निर्माण किया जो नस्ले इंसानी का सबसे उमदा, सबसे शानदार और सबसे सुंदर नमूना था जिसका हर व्यक्ति इंसानी समाज का चमकता हीरा था। जहां खानदानी बरतरी, नस्ली अजमत और पारिवारिक महानता के बजाए तकवा वो तहारत और दीनी अजमतों का हर तरफ उजाला ही उजाला था। दिलों में खानदान का गुरूर वो घमंड और वंशज के अभिमान के बजाय खुदाई खौफ और रसूले पाक की मोहब्बत के केवल का मुस्कान था। दिल और दिमाग परहेजगारी और दीनदारी के प्रकाश से प्रकाशित था।

चरित्र और पालन में खुदा का डर और इंसानों से मोहब्बत का वो बांकपन था जिसकी कल्पना ही से दिलोदिमाग में पवित्र जीवन का आधुनिक संदेश उभरने लगता है। तकवा वो तहारत (मानवता एवं पवित्रता) के संसार में आकाश गंगा जगमगाने लगती है। हृदय के आंगन में शुखियों के फूल खिलने लगते हैं और हर व्यक्ति पवित्रता के झरने में नहाकर एक नये पवित्र और आधुनिक समाज का निर्माण करने लगता है।

आज जब कि सारे धर्मावलंबियों ऊंच-नीच और छोटे-बड़े की झूठी

सीमाओं में घिरे दूसरों को घृणा और नफरत की निगाह से देखना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझ रहे हैं। ऐसे समय जरूरत है कि इस्लाम का वो क्रांतिकारी संदेश और ऐतिहासिक उपदेश लोगों के सामने लाया जाये जिसने सदियों पहले झूठे मनुष्य द्वारा खड़े किये गये दीवारों को तोड़कर विश्व के हर मनुष्य को, मानव जाति के हर व्यक्ति को एकता और सामान्यता की शिक्षा दी। समाज का प्रेम और मोहब्बत के आधार पर आधुनिकीकरण किया। अरब के रेगिस्तान में बसने वालों की किस्मत बदल कर सारे संसार में उनकी महानता का झंडा गाड़ा। जिसके परिणाम के रूप में आज के वैज्ञानितक युग और साइंसी दौर ने जन्म लिया। विश्व स्तर पर एकता समानता और बराबरी का वो वातावरण बना जिनसे अंतर्राष्ट्रीय (यू.एन.ओ.) के प्लेटफार्म पर सभी को एक साथ बैठाकर संसार के नवनिर्माण का जहन दिया।

जनछत्र १५ जून २०००

☛ If Any Religion has the chance of ruling over England any Europe, within the Next Hundred years it can Only be Islam. I have Always held the Religion of Mohammed In High Estimation because of its wonderful vitality. It is the only Religion which Appears to me to passess the Assimilating capability to the Changing face of Existance, which can Make its Apeal to Every Age.

(Barnad Sha)

अगर कोई धर्म है जो आने वाली शताब्दी में इंग्लैंड पर राज्य करे। नहीं, बल्कि संपूर्ण योरोप पर एक मात्र राज्य करे। तो वोह सिर्फ इस्लाम होगा। मैंने हजरत (मोहम्मद) के धर्म को सदा उच्चतम दृष्टि से देखा है। क्यूंकि इसके अंदर आश्चर्यजनक शक्ति है। यह एकमात्र धर्म है जिसके विषय में मेरा विचार है कि इसके अंदर यह संपूर्ण क्षमता है कि वो बदलते हुए संसार को अपने में लीन कर लें। जिसके अंदर हर युग के लिए अपील है।

पैग़म्बरे इस्लाम सारे संसार के लिए नमून-ए-अमल

धरती की कोख कभी भी गर्वशाली व्यक्तियों से खाली नहीं रही। हर दौर में ऐसे महान पुरूषों का जन्म होता रहा है जिनके गर्वशाली चरित्र से और प्रगतिशील विवेक से पूरा समाज विकसित होता रहा है उनके विचारों ने समाज को नया जीवन प्रदान किया। उसका स्तर ऊपर उठाया और मुर्दा आत्माओं को नया जीवन प्रदान करके उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। हम ऐसे तमाम गर्वशाली व्यक्तियों का आदर करते हैं जिनके जलाए हुए दीप से अंधेरे घबराते हैं और नास्तिकता की वादी में भटकने वाले राह पाते हैं।

मगर इस श्रद्धा के साथ ही साथ यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि, उन महान व्यक्तियों में ऐसे लोग बहुत ही कम है जिन्हें इतिहास में कोई स्थान मिल सका और अगर उन्हें इतिहास के पन्नों में कहीं जगह मिली भी तो इतनी कम कि उनकी पूरी जीवनी कुछ शब्दों या चंद पन्नों से आगे नहीं बढ़ सकी। कोई तो ऐसा है कि उसके सिर्फ कुछ बोल ही मिल पाते हैं। वो कौन थे, क्या थे, क्या करते थे, कुछ भी पता नहीं चल पाता. बहुतों के जीवन ऐसे हैं कि उनकी टूटी हुई कुछ कड़ियां ही मिल सकी और फिर यह ऐसा संयोग है कि, आज के साइंसी युग में भी उस कमी को पूरा नहीं किया जा सकता। न ज्ञान का कोई दीप, उनके जीवन पर प्रकाश डाल सकता है, न विवेक और कल्पना का कोई सूत्र, उन टूटे हुए बिखरे कड़ियों को जोड़ सकता है। अज्ञान और गुमनामी के कैसे कैसे अंधकार हैं, और अधूरी मालूमात के कितने पर्दे हैं, जो उन महान व्यक्तियों के जीवन को अपने अंदर छुपाए हुए हैं।

बुध, कंफ्यूशस, कृष्ण और रामचंद्र जैसे धार्मिक व्यक्ति हों या कवियों और लेखकों के दुनिया के सम्राट 'हुमर', 'चासर', 'गालिब', 'अनीस', 'दबीर', रविंद्रनाथ टैगोर जैसे लोग हों। सिकंदर 'सीजर', 'फिरऔन' और 'नमरूद जैसे अपने समय के बड़े से बड़े सम्राट हों या 'हलाकू' चंगेज और हिटलर ज़ैसे बस्तियों और शहरों को खंडहर बनाने वाले जालिम् इंसान हों। सोलिन जैसे मुक त्रिन, फीसागोरस जैसा यूनानी फिलास्फर और पत्थरों को काटकर आर्ट कि दुनिया में क्रांति पैदा करने वाले अजंता और एलोरा के आर्टिस्ट हों। उनके पूरे जीवन के सिर्फ कुछ ही पन्ने हैं जो इतिहास में सुरक्षित

रह गये हैं। वरना पूरा जीवन अंधकार के सागर में इस तरह लुप्त हो गया है कि आज कि प्रगतिशील साइन्टीफिक युग में भी उनकी खोज असंभव है। यही नहीं बल्कि मजहबी संसार के क्रांतिकारी सम्राट, पैगंबरों की दुनिया के गर्वशाली व्यक्तियों में हज़रत आदम, हज़रत इब्राहिम, हज़रते मूसा, हजरते सुलेमान, हज़रते ईसा इब्ने मरियम जैसे हृदय सम्राट हस्तियां भी हैं जिनके ख्याल और तसव्वुर ही से मन के आंगन में आकाश गंगा उतरने लगती है। मगर जब हम उनकी जीवनी पढ़ना चाहते हैं तो वो चंद पन्नों से ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाती।

विश्व के इतिहास में इन सारे महान पुरूषों में अगर कोई हस्ती ऐसी है जिस के जीवन का एक-एक क्षण, आज भी सुरक्षित हो, और जिसके मेशन का एक-एक शब्द आज भी महफूज हो तो वास्तव में एक ही और सिर्फ एक ही ज़ात है जिसे दुनिया खुदा का आखरी पैगंबर हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के नाम से जानती है। जिनके पवित्र और गर्वशाली जीवन का एक-एक क्षण और जिनके बोल के एक-एक शब्द इस तरह से सुरक्षित हैं कि हदिसों की किताबों का कोई भी पन्ना पलटते ही यसदियों का सफर मिनटों में तय हो जाता है। आंखों के सामने से पहाड़ों दरियाओं, जंगलों और रेगिस्तानों का सारा पर्दा हट जाता है और हम अपने को ऐसी दुनिया में पाने लगते हैं जहां हृदय को मोह लेने वाले उनके पवित्र और सुगंधित जीवन को हम चलते फिरते देखने लगते है। आपका परिवार कैसा था, आपके वालिद और वालिदा का क्या नाम था, आपने किसका दूध पिया था। पवित्रता को शर्माने वाली जवानी कैसे गुजारी थी, बुढ़ापे में आपके सिर में कितने बाल पके थे। एलाने नबूवत के बाद आपको कितनी परेशानी उठानी पड़ी। तूफानों का रूख मोड़ देने वाला और दरयाओं का धारा बदल देने वाला आपका प्रगतिशील संदेश ने कैसी क्रांति पैदा की। दुश्मनों के प्रति विशाल समुद्र को शर्माने वाला आपका प्रेम और स्नेह, आपके पवित्र शिक्षा ने आकाश गंगा को शर्माने वाली समाज का कैसे निर्माण किया। आपके दुश्मनों ने आपके साथ कितनी लड़ाइयाँ लड़ी। उसमें आपके कितने साथी शहीद हुए और दुश्मनों को कितना नुकसान उठाना पड़ा। आपके जीवन का एक एक पल आपके संदेश का एक-एक शब्द और आपके साथियों का एक-एक नाम और उनका परिवार इस तरह सुरक्षित है कि एक अंग्रेज प्रोफेसर को यह कहना पड़ा

Mohammed was born within the full light of histary (Hitti)
(मोहम्मद इतिहास के संपूर्ण प्रकाश में पैदा हुए)।

आपके जीवन के एक-एक क्षण की यह रक्षा दूसरे शब्दों में खुदाई एलान है कि कयामत तक अगर किसी की ज़िन्दगी हमारे लिए मार्गदर्शक है तो वो आप ही का मुकद्दस और पवित्र ज़ीवन है। चूंकि आपकी नबूवत कयामत तक और हर युग के लिए है। संसार का कोई भी क्षेत्र हो, मनुष्य का कोई भी कुम्बा हो। समाज का कोई भी हिस्सा हो। आम जनता से लेकर बड़ी बड़ी कुर्सियों पर बैठने वाले लोग हों या गांव से लेकर शहर में रहने वाले आदमी। गांव की पाठशालाओं से लेकर संसार के विश्वविद्यालय में शिक्षा देने वाले महान विचारक हों या अफ्रीका के तपते हुए रेगिस्तानों से लेकर हिमालय की बर्फों से ढंकी चट्टानों में जीवन बिताने वाले सूफी संत। हर जगह आपका पवित्र जीवन प्रकाश फैलाता दिखाई देगा और हर व्यक्ति को आपकी पवित्र वाणी एक नया जीवन प्रदान करती नजर आएगी। चूंकि आप खुदा के आखरी पैगंबर हैं इसलिए अब आप के ही माध्यम से लोग इश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आपके ही शिक्षा अनुसार जीवन बिताकर खुदा की रजा हासिल की जा सकती है। यही वो तत्व है जिसके कारण खुदा ने आपकी पूरी जिंदगी को सदा के लिए महफूज और सुरक्षित कर दिया, ताकि हम जीवन के जिस रास्ते पर चलें, ज्ञान के जिस मार्ग को अपनाएं और साइंस की जिस थ्योरी पर रिसर्च करें। हर जगह हमें आप की छत्रछाया दिखाई दे। हर व्यक्ति आपके मधुर प्रकाश से प्रकाशित हो सके और हर स्कालर आपके बताए हुए रास्ते पर चल कर अपने समाज की, अपने देश की और अपने संसार की सेवा कर सके।

जिस तरह फूलों की क्यारी से गुजरनेवाला वहां की उठती हुई भीनी-भीनी खुशबू से खुद को बचा नहीं सकता। धरती पर चलने वाला खुद को सूरज की रौशनी से छुपा नहीं सकता और समुद्र में तैरने वाला खुद को भीगने से बच नहीं सकता इसी तरह ज्ञान, समझ और विचार के इस प्रगतिशील युग में यह नामुमकिन और असंभव है कि कोई व्यक्ति आपके बारे में अज्ञान के अंधकार में रहे और आपके फैज व बर्कात से अपने आप को दूर रख सके।

आप सारे संसार के लिए मार्गदर्शक बना कर भेजे गये। पूरे विश्व के लिए आप रसूल बनकर तशरीफ लाएं, इसीलिए आप को इतना ऊंचा रखा गया कि

जब भी कोई व्यक्ति हकीकत की दुनिया में नजर उठाए तो सबसे पहले उसकी नजर आप पर पड़े। जब भी कोई खुदाई रास्ता और ईश्वरीय ज्ञान पाना चाहे तो सबसे पहले उसे आप ही नजर आएं और जब कोई आपके महान जीवन चरित्र का अध्ययन करना चाहें तो आकाश गंगा की सुंदरता को लज्जाने वाली और सुबह की ठंडी हवा की पवित्रता को शर्माने वाली आप के सुंदर और पवित्र जीवनी देखकर उसका मन गद-गद हो जाए।

आपके क्रांतिकारी संदेश पढ़कर उसकी मुर्दा आत्मा जाग उठे और उसके अंदर की आत्मा खुद पुकार उठे कि अगर किसी के जीवन से मनुष्य का उद्धार हो सकता है और वास्तविकता की वादी में भटकने वाली आत्मा को किसी से शांति मिल सकती है तो वो आप ही का जीवन और आप ही का कल्याणकारी संदेश है। जिसके छत्रछाया में दम तोड़ती मानवता, तड़पती इंसानियत, सिसकती आदमिय्यत नया जीवन प्राप्त कर, मनुष्य को नया मोड़ देकर भक्ति एवं प्रेम का संदेश देने लगती है। आप का क्रांतिकारी संदेश और कल्याणकारी जीवन मनुष्य को इतना सक्षम विराट और प्रभावशाली बना देता है कि वो चंद्रमंडल को भी विजय करने का सपना देखने लगता है और उसके हृदय में आकाशगंगा को भी छूने की अभिलाषा एवं लालसा जाग उठती है। वो खुद को सारे-संसार में सब से सर्वश्रेष्ठ, सबसे महान और सबसे ऊंचा समझने लगता है। उस समय उस पर यह वास्तविकता प्रकाशित होती है कि चांद और सूरज से लेकर धरती तक और आकाश से लेकर पाताल तक, सब मनुष्य के लिए है। उनकी रचना ही इसलिए की गयी है कि वो मनुष्य की दास्ता करें और मनुष्य पर राज्य करें। यहां पहुंचकर उसे यह समझते देर नहीं लगती कि पूरा संसार मनुष्य के लिए। यह आसमानों पर जलते दीपों की बारात, यह धरती पर बिछा हुआ मखमली फर्श, यह पर्वतों से गिरते झरनों की मधुर शहनाई, यह दरियाओं की जवानी, यह पूलों की रंगीनी, यह समुद्र की तुगयानी, यह सब कुछ मनुष्य के लिए हैं और वो सिर्फ अपने ईश्वर के लिए। सब मनुष्य के सामने झुकेंगे मगर वो सिर्फ और सिर्फ अपने ईश्वर के सामने झुकेंगे।

जानवर पैदा हुए तेरी वफा के वास्ते, चांद सूरज और सितारे सब जिया के वास्ते
खेतियां सब्ज हैं सब तेरी गिजा के वास्ते, सारा जहां तेरे लिए और तू खुदा के वास्ते

(18 जुलाई 1997 जनछत्र)

मानव अधिकार और हज्जतुल विदा

मानव अधिकार के इतिहास पर नजर डालिए तो लोग सबसे पहले जिस की चर्चा करते हैं वो है इंग्लैंड का मेगना कारटा। जिसे तेरहवीं शताब्दी में हेरी द्वितीय के लड़के और रिचर्ड शेरदिल के भाई बादशाह जान (1199-1216) नें जून 1215 को जारी किया था। जहां भी मानव अधिकार की बात कीजाती है वहां उसे आधारशिला बताया जाता है बल्कि प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान वोल्टर ने तो उसे स्वतंत्रता का घोषणा पत्र भी कहा है। मगर दुनिया इस हकीकत से भी अच्छी तरह वाकिफ है कि न तो वो पूरे संसार के लिए था न ही उसमें इसकी योग्यता है कि वो सबों के लिए हो। वास्तविकता तो यह है कि वो सिर्फ कुछ विशेष समय के लिए और एक विशेष वर्ग के लिए बनाया गया था। चूंकि वो योरोप की आवाज थी इसलिए सारे संसार को यह यकीन दिलाने के लिए कि इल्म और फिक्र सिर्फ योरोप ही की जागीर है इसलिए उसे पहला मेनीफेस्टू मान लिया गया।

फिर उसके लगभग पांच सौ साल बाद जब 1789 में फ्रांस का मानव अधिकार सामने आया तो उसके बारे में भी शोर मचाया गया कि उसने ही आजादी का चिराग जलाकर लोगों को जीवन बिताने का क्रांतिकारी मार्ग दर्शाया। मगर उसके कुछ ही साल बाद दिसंबर 1791 ई. में जब अमरीकी बिल आफ राइट दुनिया के सामने आया तो इसे नई दुनिया का संसार के लिए बेहतरीन तोहफा समझा गया। फिर दिसंबर 1948 को जारी होने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ का मेनीफेस्टो को उज्जवल भविष्य का महान दीप समझा गया। यहां तक कि कुछ लोगों ने उसे इंसानी हुकूक के लिए दी जाने वाली कोसिशों की अंतिम कड़ी कहना शुरू कर दिया जबकि महान विद्वानों और विचारकों की बेमिसाल कोशिशों के नतीजे में आने वाला यह मेनीफेस्टू भी बेशुमार खामियों और गलतियों से भरा पड़ा है। गालिबन उस के बनाने वाले भी इससे अच्छी तरह वाकिफ थे। शायद इसीलिए तो हर मुल्क को इसकी आजादी भी दी गयी कि वो चाहें तो उस पर अमल करे और न चाहें तो न करे।

मगर इससे सदियों पहले पैगंबरे इस्लाम ने मक्का की धरती से अराफात की वादी में एक लाख चौबीस हजार इंसानों की बीच जो संदेश दिया था संसार

आज तक उसका जवाब पेश करने से मजबूर है।

हुज्जतुल विदा (आखिरी हज) के मौके पर दिये गये पैगंबरे इस्लाम के खुतबा ने तारीखे इंसानी का धारा मोड़ कर दुनिया में एक नये इंकेलाब की बुनियाद डाली। जिसके जरिए मालूम तारीख में पहली बार सारे इंसानों को एक खानदा और एक कबीला बताया गया। आप का इतिहासिक और मानव जाति का उद्धार करने वाला यह मेनीफेस्टू लगभग चालीस धाराओं पर सम्मिलित है जिसकी सुगंध से एक तरफ विश्व विद्यालय महक रहे हैं तो दूसरी तरफ उसकी प्रकाश से आज धरती का चप्पा-चप्पा प्रकाशित हो रहाह ै। आपके पवित्र संदेश के जरिये पहली बार सारे संसार को अमन वो सलामती का पैगाम मिला और लिंग भेद का मिटाकर सारे संसार को एक परिवार और एक खानदान बताया गया। जिसके आधार पर आगे चलकर प्रेम, मोहब्बत, मानवता और बराबरी की पवित्र छत्रछाया लिए हुए एक ऐसे समाज का निर्माण हुआ जिसकी सुंदरता के समक्ष पूर्णिमा का चांद भी लज्वान्तत होने लगा और जिसकी मधुरता पर आकाशगंगा भी न्यौछावर होने लगी।

पैगम्बरे इस्लाम ने अपने जीवन के अंतिम हज (हुज्जतुल वेदा) में जब यह एलान किया कि किसी अर्बी को किसी अजमी पर और किसी अजमी को किसी अर्बी पर कोई फजीलत नहीं। तुम सब हजरत आदम की औलाद हो और हजरत आदम मिट्टी से पैदा किये गये। उस समय सारा संसार नस्ली और समाजी आधार पर विभिन्न वर्गों में बंटा हुआ था। यहूदी अपने आप को सारी दुनिया में सबसे ऊंचा समझा करते थे। इसीलिए उनका नारा था - न हनों अब ना उल्लाह - हम खुदा के चहीते हैं) نحن ابناء الله واحباؤه

ईसाईय्यत कई फिरकों में बटी खुद को सारे संसार में सबसे महान कहलवाने की फिक्र में परेशान थी। भारत में भी एक टोला खुद को हाकिमें आला करार देते हुए और पिछड़ी जातियों को शुद्र और मलिच्छ बताते हुए उनसे जीने का भी अधिकार छीन लेना चाहता था। औरतों को सती होने पर मजबूर किया जा रहा था। लौंडी और गुलामों को जानवरों से भी बदतर समझा जा रहा था। मगर आप के इस पवित्र और गर्वशाली संदेश ने नस्ली, तबकाती और पारिवारिक बुनियाद पर नकली बड़ाई को जड़ बुनियाद से इस तरह उखाड़ फेंका की आज सारे संसार में कहीं भी उसे सर छुपाने के लिए जगह नहीं मिल रही है। औरतों, लौंडियों और गुलामों को जीने का अधिकार देकर आपने

उन्हें इतना ऊंचा उठाया कि न सिर्फ दौरे गुलामी का खातिमा होने लगा बल्कि गुलाम भी खुद को राजपाट और शासन का हकदार समझने लगे।

सूदी और ब्याजी धंधे जिन्होंने न जाने कितने परिवारों और खानदानों को उजाड़ दिया था। पीढ़ी दर पीढ़ी, जिसके बोझ तले दबी पड़ी थी उन सभी को उसकी मनहूसियत से इस तरह बचाया कि हर व्यक्ति उसके लेनदेन से डरने लगा।

इसी तरह कतल और रक्तपात जहां जीवन की आधारशिला थी वहां हर व्यक्ति के दिल में उसकी हुर्मत और उसका एहतेराम इस तरह से बसाया गया कि पूरा समाज रक्तपात से मुक्त होकर प्रेम और मोहब्बत की शीतल सरिता में तैरने लगा।

अराफात की धरती से गूंजने वाला आपके आखरी खुतबे के पवित्र बोल आज भी सारे संसारल वालों के लिए मार्गदर्शक हैं। जिस को अपनाकर एक समय सारे संसार ने न सिर्फ सुकून वो इतमिनान महसूस किया था बल्कि पूरा स्टेट का स्टेट प्रेम और मोहब्बत की सुगंध से मुस्कराने लगा था। जिसने ऐसे समाज को जन्म दिया जहां हर तरफ खुशियों का उजाला था। हर सिम्त मसर्रत वो शादमानी का सबेरा था। हर मनुष्य पूरी स्वतंत्रता के साथ जीने की तमन्ना रखता था। समाज का पिछड़ा वर्ग भी उसी तरह जीवन बिताने का अधिकार रखता था जिस तरह दूसरे स्वर्ण एवं ऊंचे जाति के लोग जीने का हक रखते थे।

इस सदी में भी सदियों की दौड़ धूप और दिन व रात की कोशिशों के बावजूद आज की दुनिया उसकी गर्द को भी नहीं पहुंच सकी जहां सदियों पहले रसूले पाक ने मसावात और बराबरी की बुनियाद पर एक पाकीजा और पवित्र समाज का निर्माण किया था।

दुनिया की यह नाकामी, मुदब्बिरों और मुफक्किरों की यह लाचारी, दानिश्वरों की यह बेचारगी क्या इस हकीकत का ऐलान नहीं है कि नबवी फैजान और खुदाई फरमान को छोड़कर जब भी दुनिया ने कदम बढ़ाया है उसे सिर्फ मायूसी, नाउम्मीदी और नाकामी ही मिली है।

आकाश की बुलंदियों को छूने वाला और आकाशगंगा की ऊंचाई का शर्माने वाला इस प्रगतिशील युग में यह जेहनी अफलास, यह दिमागी परेशानी, यह कल्बी बेचैनी और यह रूहानी बेकरारी आज के मुसलमानों को दावते फिक्र दे रही है कि

रसूले पाक का पवित्र जीवन, आप के अमर सिद्धांत और आपके जरिए दिया गया कल्चर ही वो अमृत धारा है जहां दर-बदर ठोकर खाने वाली दुनिया नई जिंदगी हासिल कर सकती है। परेशान हाल दिमाग और बेचैन कल्बों जिगर को सुकून की दौलत और एकता व अखंडता और अहिंसा की शीतल सरिता उसी में मिल सकती है।

इस्लाम का यह अजीमुश्शान दस्तूर, यह लाजवाब कानून, यह बेमिसाल मेनीफेस्टू उस पैगंबर के जरिये दिया गया। जो क्षेत्रीय रसूल नहीं थे। जिन्हें किसी एक वर्ग या संप्रदाय के लिए नहीं भेजा गया था। जो किसी एक समुदाय के उद्धार के लिए नहीं आए थे बल्कि जिन्हें खुदा ने सारे संसार के लिए रसूल बनाकर भेजा था। सदेश भी बेमिसाल है और लाने वाले रसूल भी बेमिसाल है।

मुजद्दिदे आजम सरकार आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी (अलैहिर्रहमा) इर्शाद फरमाते हैं -

सबसे आला व वाला हमारा नबी। सबसे बाला व वाला हमारा नबी ॥

पश्चिमी कल्चर ने आज दुनिया को सिर्फ जिल्लत और रूसवाई दी। मिश्र और सूडान से लेकर अलजजाएर और तुर्की तक जिसने भी उसे अपनाया उसे बर्बादी के अलावा कुछ भी नहीं मिला। उनका यही मुद्आ और मकसद भी है कि दुनिया हमेशा उनकी जहनी गुलामी में फंसी रहे। हुकुके इंसानी का नारा हो या औरतों की मजलूमी का रोना। बूसिनियां या चुचुनियां के मसाएल हों या संयुक्त राष्ट्र संघ का प्लेट फार्म। हर जगह एक ही विचारधारा, एक ही जहन और एक ही दिमाग नजर आएगा कि दुनिया पर गुलामी के साये कैसे दराज किये जायें और लोगों को अपना जहनी गुलाम कैसे बनाया जाए।

जिन लोगों ने उनके मिशन को अपनाया और उनकी जहनी गुलामी का पट्टा अपने गले में डाला। जाहिल होने के बावजूद महान विद्वान, लाजवाब दार्शनिक, उच्च शिक्षा शास्त्री और अत्यंत प्रगतिशील जैसे पदवी से उन्हें सम्मानित किया गया। सलमा रूशदी और तस्लीमा नरसीन जिसके खुले उदाहरण हैं मगर जब लोगों ने अक्ल व होश का दामन थाम कर और फिक्र व फन का चिराग लेकर मोमिनाना जसारत और मुजाहिदाना किरदार का जल्वा दिखाया और इस्लाम के दामने रहमत के साए में पवित्र और पाकीजा जिंदगी की तरफ पेशकदमी की तो दुनिया लरज उठी। शैतानी ताकतें और राक्षसी

शक्तियां कांपने लगीं और इबलीसी फितरत अपना रंग दिखाने लगी। फिर उन्हें कभी फंडा मेंटालिस्ट कहा जाने लगा तो कभी रूढ़िवादी और दकियानूसियत की पदवी दी गयी और कभी जाहिल अनपढ़, अशिक्षित और गंवार का टाइटल दिया गया। 70 वर्ष तक यूरोप की गुलामी में जिंदगी गुजारने वाला तुर्की आज इस्लाम की तरफ लौट रहा है तो पूरा यूरोप कांप रहा है। 140 वर्ष तक फ्रांस की गुलामी में सांस लेने वाला अलजजाएर की औरतें नारा बुलंद कर रही हैं -"ऐ अल्लाह के रसूल। खुदा की रहमत हो आप पर। अलजजाएर आपकी तरफ लौ टरहा है।" तो यूरोपियन कल्चर के दिवानों के कलेजे फट रहे हैं। पूरा मीडिया उन्हें बदनाम करने पर तुला हुआ है। गोया उनके नजदीक तरक्की और उन्नति नाम है यूरोप की गलामी का और तनज्जुली, बर्बादी नाम है इस्लाम की पैरवी का।

सलमान रूश्दी ने तौहीने रसूल का जुर्म क्या किया कि सारे यूरोप ने उसे मुफक्किर, मुदब्बिर, अकलमंद और उच्च शिक्षा शास्त्री बावर करवाते हुए उसकी हिफाजत में करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा दिया। तस्लीमा नसरीन ने इस्लामी कानून पर ऐतराज किया तो उसे दुनिया की महान नारी का ढिंढोरा पीटते हुए सारा मीडिया उसकी रक्षा में उठ खड़ा हुआ। यह और इस तरह की घटनाएं हमें दावते फिक्र दे रही हैं कि दुनिया इस्लाम को क्या बनाना चाहती है और हुकूके इंसानी का दावा कितनी हकीकत रखता है। हुज्जतुल विदा के मौके पर रसूले अर्बी के खुतबा की रौशनी उस वक्त और बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि दुनिया के पास शर्मनाक माजी है जिससे घबराकर वह तारीक मुस्तकबिल और अंधकार भविष्य में खो जाना चाहती है जबकि हमारे पास रौशन माजी है जिसकी पाकीजा किरणों से एक तरफ मुस्तकबिल भी रौशन है और दूसरी तरफ रूहानी सुकून, दिली इतमिनान, जहनी पाकीजगी भी काएम है। ऐसी हालत में उम्मते खैर होने की वजह से हमारी जिम्मेदारी है कि न सिर्फ हम खुद अपने मुकद्दस और पाकीजा तहजीब से वाबस्ता रहें। बल्कि आज की परेशान हाल दुनिया को भी उससे वाबस्ता करें।

ढूंढनेवाला सितारों की गुजरगाहों का। अपने अफकार की दुनिया में सफर कर न सका ॥
जिसने सूरज की शोआओं को गिरफ्तार किया। जिन्दगी की शबे तारीक सेहर कर न सका ॥
उठे कि अब बज्म जहां का और ही अंदाज है। मशरिक वो मगरिब में तेरे दौरे का आगाज है ॥

This is the Passing Glimgte of Islam And it has much to Offer in our Restless World. But it Seems to Be An Abandoned Treasure, Abandoned by those who Bear Its Name no wonder there lines are so different from the Glory. I described and unless they return Back to it again, They will remain in Bewilderment in the rear of Humanity's Prosession, for its is ready light and guidance from God for than and for the world (PTT)

(Drchers wady the Muslims mind MacMillan Co. Ltd. Bombay)

आस्ट्रेलिया की इसाई लेखिका अपनी पुस्तका में इस्लाम धर्म का परिचय करते हुए लिखती हैं :-

''ये इस्लाम का एक साधारण सा विवरण है और इसमें हमारे व्याकुल संसार के लिए बहुत कुछ है। मगर वास्तव में ये एक छोड़ा हुआ अपार धन (खजाना) मालूम होता है। जिसको उन लोगों ने छोड़ा है जो उसका नाम लेते हैं। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं? कि उनके जीवन उस महान सम्पत्ति से बहुत अलग है जो मैंने वर्णन किया है और जब तक वोह फिर से इस्लाम की ओर वापस न आयेंगे वोह असंतुष्ट, तत्वहीन, व्याकुल, मनुष्यता के डेरे से बिछुड़े रहेंगे। क्योंकि ईश्वर की ओर से यही एक संदेश प्रकाश की एक किरण मार्गदर्शन है, उनके लिए भी और पूरे संसार के लिए भी.''

Islam is Peace - इस्लाम शांति का प्रयाय है।

जार्ज डब्लू बुश (राष्ट्रपति अमरीका, वाईस आफ अमरीका 18-9-2001)

Printed By - GHARIB NAWAZ PRESS, RAIPUR PH. 210812

दिलों में इन्केलाब बरपा करने वाली मोहसिने मिल्लत एकेडमी की तारीख साज़ किताबें

1. इस्लाम और साईंस (हिन्दी)
2. इस्लाम और इक्कीसवीं सदी (हिन्दी)
3. मस्जिदे अकसा से गुम्बदे खज़रा तक (उर्दू)
4. इमाम अहमद रज़ा पर सैहूनियत की यलगार (उर्दू)
5. इस्लामी तालीम और मगरबी तालीम का बुनियादी फर्क (उर्दू)
6. मध्य भारत का अज़ीम मसीहा (हिन्दी)
7. हजरत मोहसिने मिल्लत (उर्दू)
8. इमाम अहमद रज़ा और शुद्धि आंदोलन (उर्दू)
9. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश
10. ज़लज़ला – अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
    हिन्दी – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
11. पंज सूरए रज़विया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
12. तबलीगी जमात –अज–अल्लामा अर्शदुल कादरी
    हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
13. आशिके रसूल (इमाम अहमद रज़ा)
    – अज प्रोफेसर मसऊद अहमद सा. (पाकिस्तान)
14. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
15. ताजदारे छत्तीसगढ़ – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
16. कुत्बे राजगांगपुर – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
17. ताजुल औलिया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
18. रायपुर की बहार (बंजारी वाले बाबा) – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
19. तजकिर ए बर्हाने मिल्लत – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
20. इस्लाम और मोआशिरा – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
21. तबलीगी जमात और इस्लाम – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
22. बाबरी मस्जिद (तारीख के आईने में) – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी